इरेडा
IREDA

अक्षय क्रांति

अंक : जनवरी से जून, 2016 (अर्धवार्षिक)

इरेडा की हिंदी ई-पत्रिका : एक अभिनव प्रयास

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री के.एस.पोपली

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

श्री एस.के. भार्गव

निदेशक (वित्त)

पी. श्रीनिवासन

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

संगीता श्रीवास्तव

प्रबंधक (राजभाषा)

अक्षय क्रांति

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेखक/रचयिता सर्वश्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
01	संदेश–अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	– – –	– – –	– – –
02	राजभाषा गतिविधि	विवरण	राजभाषा ग्रुप	06
03	कोमल है, कमजोर नहीं है नारी	लेख	चंद्रकला मिश्र	07–08
04	हिंदी इतनी समर्थ, फिर क्यों असमर्थ	लेख	साभार	09–12
05	चलें वक्त के साथ	कविता	कंछिद कुमार	13
06	हे नाथ ! मेरी विनती सुन लो	कविता	कंछिद कुमार	14
07	धरती की पुकार	कविता	चंद्रकला मिश्र	15
08	बचपन	कविता	मीतू माथुर बधवार	16
09	महिला सशक्तिकरण के बिना भारत का विकास संभव नहीं	लेख	मनीष शंकरराव गवई	17
10	राजभाषा 'हिंदी' दशा–दिशा	लेख	डॉ. प्रभु चौधरी	18–19
11	काव्यानुवाद	अनूदित कविता	यश वर्धन	20
12	शहर	कविता	मनीष चन्द्र	21
13	माँ	कविता	बिन्दु विमल पत्नी – श्री आर.के. विमल	22
14	शिक्षा के माध्यम	लेख	कृपाराम लहकरा	23–24
15	राजभाषा गतिविधि	विवरण	राजभाषा ग्रुप	25–29
16	प्रकृति	कविता	संगीता श्रीवास्तव	30
17	चमत्कारी पेड़–पौधे	स्वास्थ्यपरक सलाह	संकलन	31
18	विश्व पर्यावरण दिवस	लेख	संकलनकर्ता संगीता श्रीवास्तव	32–38
19	चप्पल	कहानी	कमलेश्वर	39–42
20	नीयत में खोट	लघु कथा	संकलन	43
21	कायान्तरण	लघु कथा	संकलन	43
22	बैल कहे किसान से	कविता	प्रेम सिंह चंदेलिया	44
23	अफ़सोस	लघु कथा	संकलन	45
24	क्या तुमने कभी....	लघु कथा	संकलन	45
25	आपसी विश्वास	प्रेरक प्रसंग	आशीष जॉन एक्का	46
26	लिफ्ट	लघु कथा	पूनम सुभाष	46
27	खुशवंत सिंह – मेरी यादों में	संस्मरण	कुलदीप सिंह	47–48
28	हिंदी वेबसाइट संसार	जानकारी	कुलदीप सिंह	इनसाइड कवर–II
29	इरेडा विज्ञापन	– – –	– – –	आउटसाइड कवर–II

के. एस. पोपली
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था सीमित
Indian Renewable Energy Development Agency Limited

संदेश

भाषा किसी भी समाज को दिशा प्रदान करती है, क्योंकि भाषा के माध्यम से ही हम अपनी संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ले जाने में समर्थ हो पाते हैं। भाषा से ही हम अपने विचारों व भावों को एक–दूसरे तक पहुंचा पाते हैं। इसी क्रम में कम्पनी की हिंदी ई–पत्रिका ''अक्षय क्रांति'' का यह अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

इस पत्रिका का एक मात्र उद्देश्य कम्पनी के कार्मिकों की रचनाशीलता को सभी के सम्मुख प्रस्तुत करना है। राजभाषा हिंदी, सरकार और जनता के बीच एक सेतु का कार्य करती है, जिससे हम समाज की अंतिम इकाई तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं। इसके अलावा, हम सबका यह संवैधानिक दायित्व है कि हम सब राजभाषा नीति, संकल्प, अधिनियम, नियम और समय–समय पर जारी राष्ट्रपति आदेशों का अनुपालन करें तथा राजभाषा को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता भी जाहिर करें।

पिछला वित्तीय वर्ष 2015–16 इरेडा के लिए उपलब्धियों भरा रहा है, इनमें से कुछ प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित हैं:

- वित्तीय वर्ष 2015–16 के दौरान **7,806 करोड़ रुपए की उच्चतम ऋण संस्वीकृति** का लक्ष्य प्राप्त किया, जो पिछले वर्ष के मुकाबले **71% से अधिक** दर्ज किया गया। इसी प्रकार, पिछले वर्ष की तुलना में **62% से बढ़कर ऋण संवितरण 4,257 करोड़ रुपए** हो गया।
- वित्तीय वर्ष 2015–16 के लिए **150 करोड़ रुपए (अंतरिम) लाभांश** भारत सरकार को सौंपा गया।
- बाजार में बॉन्ड जारी करके **2,000 करोड़ रुपए** का सफलतापूर्वक अर्जन किया गया।
- एशियन विकास बैंक के साथ 500 मिलियन अमरीकी डॉलर मल्टीट्रांचे वित्तीय सुविधा (एमएफएफ) से 200 मिलियन अमरीकी डॉलर की पहली किश्त हेतु **न्यू लाइन ऑफ क्रेडिट** पर हस्ताक्षर किया गया।

- केएफडब्ल्यू, जर्मनी के साथ बिना सावरेन गारंटी के 100 मिलियन यूरो की 5वीं लाइन ऑफ क्रेडिट पर हस्ताक्षर किया गया।
- सह–वित्तीयन के माध्यम से भारत में अक्षय ऊर्जा के विकास हेतु मिलकर कार्य करने के लिए आईएफसी और येस बैंक के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) हस्ताक्षरित किया गया।
- उभरते बाजार में आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नई स्कीमों की शुरूआत की गईः

  o एग्रीगेटर (आरईएससीओ) के माध्यम से सोलर रूफ टॉप स्कीम और :

  o एनर्जी बिलों में डिस्काउंट की स्कीम

  o नई इंटरमीडियरी ऋण योजना – एसपीवी वाटर पंप हेतु एग्रीगेटर एसपीवी/चीनी मिलों के माध्यम से किसानों को वित्तीयन।
- भारत सरकार द्वारा इरेडा को **'मिनी–रत्न श्रेणी– I'** सीपीएसई का दर्जा दिया गया।
- इरेडा पहले से ही आईएस/आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित कंपनी थी, जिसे आईटी सुरक्षा के अनुपालन हेतु **आईएसओ 27001:2013** का भी प्रमाणन प्राप्त हुआ।
- राष्ट्र की निरंतर सेवा में वर्ष के दौरान कुछ अन्य प्रतिष्ठित एवार्ड जैसे : स्कोप मेरीटोरियस एवार्ड, गोल्डन पीकॉक एवार्ड राजीव गांधी राष्ट्रीय गुणवत्ता एवार्ड, ईटी एवार्ड, एचआर एक्सीलैंस एवार्ड इत्यादि
- "अक्षय क्रांति" पत्रिका के पिछले अंक को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा ई–श्रेणी में प्रथम पुरस्कार।

इन सभी उपलब्धियों के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई और इसके साथ ही नए वित्तीय वर्ष 2016–17 से कम्पनी की उम्मीदें भी बढ़ी हैं। हमें आशा व विश्वास है कि हम भविष्य में **प्रभावी वित्तीयन** (Effective Financing) द्वारा **हरित और स्वच्छ ऊर्जा** (Green & Clean Energy) के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू सकेंगे। ई–पत्रिका का यह अंक अलग–अलग विषयों पर रोचक लेख, कहानी, कविता, स्वास्थ्यपरक सलाह इत्यादि से भरा एक पिटारा है, जो आपके सामने है।

हरित ऊर्जा, स्वच्छ ऊर्जा

शुभकामनाओं के साथ,

(के.एस.पोपली)

इरेडा
IREDA

नराकास द्वारा इरेडा की हिंदी ई–पत्रिका 'अक्षय क्रांति' को प्रथम पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वायन समिति (उपक्रम), दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 27 अगस्त, 2015 को स्कोप कॉम्प्लेक्स में आयोजित 41वीं बैठक में ई–पत्रिका की श्रेणी में इरेडा की ई–पत्रिका 'अक्षय क्रांति' को 'प्रथम पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। श्रीमती पूनम जुनेजा, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया। इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को इरेडा कंपनी की ओर से महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री पी. श्रीनिवासन और प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती संगीता श्रीवास्तव ने ग्रहण किया।

राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा इरेडा को राजभाषायी कार्यों हेतु 'कार्यालय दीप स्मृति चिह्न' प्रदान किया गया।

राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 27, 28 एवं 29 अप्रैल, 2016 के दौरान सोलन, हिमाचल प्रदेश में आयोजित 80वीं (प्लैटिनम जयंती + 5) संगोष्ठी एवं हिंदी कार्यशाला "आज के बदलते परिवेश में राजभाषा हिंदी" में इरेडा को राजभाषा के अधिकतम प्रयोग करने के लिए सर्वोत्तम कार्यालय हेतु 'कार्यालय दीप स्मृति चिह्न' पुरस्कार प्रदान किया गया जिसे इरेडा की ओर से प्रबंधक (रा.भा.) ने ग्रहण किया ।

उक्त तीन दिवसीय कार्यक्रम में इरेडा की ओर से प्रबंधक (राजभाषा), श्रीमती संगीता श्रीवास्तव और कनि. हिंदी अनुवादक, श्री कुलदीप सिंह ने भाग लिया । इस कार्यक्रम में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि से 100 से भी अधिक कार्मिकों ने भाग लिया ।

कोमल है, कमजोर नहीं है नारी

–चन्द्रकला मिश्र

नित त्याग तपस्या श्रम से, खुशियों के फूल खिलाती है।
स्नेह प्रीति विश्वास लिए, नारी जीवन में आती है।।

–दयाशंकर पाण्डेय 'मधुकर'

सृष्टि के लिए स्त्री और पुरूष दोनों का अस्तित्व अनिवार्य है। ये एक दूसरे के पूरक हैं, अर्थात् एक के बिना दूसरे का जीवन अधूरा है। स्त्री–पुरूष के संदर्भ में परस्पर निर्भरता और सहजीवन एक संपूर्ण सत्य है। दोनों गृहस्थी रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। पुरुष के जीवन में स्त्री दादी, नानी, माँ, बहन, पत्नी, बेटी और दोस्त की भूमिका तथा सबसे महत्वपूर्ण परिवार की संरक्षक की भूमिका बखूबी निभाकर स्वस्थ परिवार और समाज का निर्माण करती है। स्त्री के बिना किसी घर की कल्पना ही नहीं की जा सकती। वह पुरूष के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जीवन के महाभारत में मोहग्रस्त खड़े अर्जुन की गीता है, जो बिना कुछ कहे–सुने अपनी उपस्थिति मात्र से चमत्कार कर देती है। तभी तो हिंदी कवि अशोक रावत ने लिखा हैः

खुशबू जैसा, फूलों और बहारों जैसा है।
उसका घर में होना ही त्योहारों जैसा है।।
उसके होने से हर चीज महकती है,
उसका होना सूरज चांद सितारों जैसा है।।

हमारे पूर्वजों ने स्त्री के वामा रूप की कल्पना इसीलिए की थी कि ये साथ मिलकर संपूर्णता को प्राप्त करें।

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत ने लिखा है–सुंदर सुमन, विहग सुंदर, मानव तुम सबसे सुंदरतम। मनुष्य इस सृष्टि की सबसे सुंदर रचना है और ईश्वर ने इस सुंदरतम कृति की अनुपम विभूति अर्थात सृजनशक्ति से नारी को विभूषित किया है। वेदों मे कहा गया है–"जो सृष्टिकर्ता की ओर से दुर्लभ उपहार है, वह शक्ति, भक्ति व श्रद्धा की आराध्य है। दुनिया की सबसे बड़ी धरती है। प्रथम प्रणाम की अधिकारिणी है। ममता की अनमोल दास्तान है।" तभी तो इसके मां स्वरूप को प्रणाम करते हुए किसी कवि ने लिखा है कि–पांव छुए सब काम हुए, अम्मा बड़ी मुहूरत थीं।

सृजन के लिए सहज, सरल और कोमल स्वभाव आवश्यक है। इसीलिए, ईश्वर ने नारी को सहनशील बनाया है, सहज और सरल बनाया है, कोमल बनाया है, उसे क्रूर नहीं बनाया। किंतु, वह अपनी सहनशक्ति की सीमाओं को टूटते देखकर और किन्हीं कारणों से स्वयं को असुरक्षित महसूस करके क्रोध की ज्वाला पर भी चढ़ जाती है। जहां वह अपनी ममता और सहनशीलता दिखाकर अपने कोमल मन का परिचय देती है, वहीं जन कल्यााण और न्याय की रक्षा के लिए दुर्गा और काली का रूप भी धारण कर लेती है।

स्त्री की सृजनशीलता जीवन के हर क्षेत्र में विविध रूपों में देखने को मिलती है। भारत में यह सदियों से बौद्धिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई है। हम वैदिक काल पर एक नजर डालें तो देखेंगे, वहां शाश्वती, लोपामुद्रा, अपाला, घोषा, सिकता, निवावारी जैसी अनेक नारियां थीं, जो बुद्धिमता और शिक्षा में पुरुषों के समकक्ष थीं। उस समय समाज में महिलाओं को भी पुरुषों के बराबर दर्जा प्राप्त था। ऋग्वेद की ऋषिका–शची पोलोमी के ये शब्द इस बात के प्रमाण हैंः

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचानी।
ममेदनु क्रतुपतिरू सेहनाया उपाचरेत।।

(मैं ध्वजारूप गृह स्वामिनी, तीव्र बुद्धि वाली एवं प्रत्येक विषय पर परामर्श देने में समर्थ हूँ। मेरे कार्यों का मेरे पतिदेव सदा समर्थन करते हैं!)

यहाँ सती सावित्री जैसी नारी भी हुईं, जिन्होंने अपने प्रेम, साधना और विश्वास के बल पर अपने पति को यमराज से भी वापस ले लिया। यह सबको मालूम ही है कि 1857 में हुए प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने पराक्रम से न केवल भारत की, बल्कि दुनिया भर की महिलाओं को गौरवान्वित किया था।

वर्तमान युग में एक बार फिर नारी घर की चारदीवारी से बाहर निकली है और बौद्धिक क्षेत्र में भी पुरुष के बराबर जिम्मेदारियां निभा रही है। वह अपने भविष्य के प्रति सचेत होने लगी है और अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने लगी है। बेटी, बहन, पत्नी और माँ होने के साथ–साथ वह डॉक्टर, इंजीनियर, सीईओ, बिजनेसवुमन और न जाने कितने ही किरदार निभाने लगी है। शिक्षा, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, सेना, खेल, व्यापार, नीति–निर्धारण, साहित्य, राजनीति, प्रौद्योगिकी आदि प्रत्येक क्षेत्र में इसने अपना स्थान बना लिया है। वह सरहदों पर रहकर देशवासियों की रक्षा भी करने लगी है और अंतरिक्ष में जाकर ग्रहों की खोज भी। आज की नारी यदि गृहिणी भी है तो वह इस भूमिका के साथ–साथ, मोबाइल, कम्प्यूटर और टी.वी. के जरिए पूरी दुनिया की खबर रखती है और अपनी क्षमताओं के उपयोग

के लिए अवसर की तलाश में रहती है। वह जीवन के हर क्षेत्र में नई ऊंचाइयों को छू रही है और परिवार की देखभाल के साथ–साथ घर में आर्थिक योगदान करके दोहरी भूमिका अदा कर रही है।

आज जब महिला सशक्तिकरण की बात होती है तो इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि स्त्री पुरूष की प्रतिद्वंद्वी है, जबकि ऐसा नहीं है। महिला सशक्तीकरण का तात्पर्य नारी उच्छृंखलता भी नहीं है। स्त्री का पुरुष से कोई बैर नहीं है, बल्कि वह सचेत होना चाहती है– अपने अस्तित्व की रक्षा के प्रति, अपने अधिकारों के प्रति और ईश्वर प्रदत्त अपनी क्षमताओं की पहचान के लिए। वह तो प्रेम का झरना है, जो अपने हर संबंध को समृद्ध बनाए रखने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देती है। जब वह अपने हर संबंध को हर धूप से बचाकर रखती है, तो क्या उसके परिवार और समाज से उसे अपने हिस्से की छांव नहीं मिलनी चाहिए?

बदलती हुई सामाजिक परिस्थितियों में उसकी स्थिति में सुधार जरूर हुआ है और कुछ हद तक पुरुष की मानसिकता में भी परिवर्तन आया है, लेकिन सामाजिक संतुलन तथा स्वस्थ परिवार और समाज के निर्माण के लिए यह काफी नहीं है। समाज की वर्तमान दुर्दशा को देखते हुए यह जरूरी हो गया है कि स्त्री और पुरुष, जिनमें अलग–अलग शारीरिक विशेषताएं हैं, मिलकर एक स्वस्थ समाज की स्थापना करें, जो स्त्री और पुरुष दोनों के लिए अनुकूल हो, जहां किसी को अपने अधिकारों के लिए लड़ने की आवश्यकता ना पड़े। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता और क्षमता को प्रदर्शित करने का अवसर मिले। जीत उसी की हो, जो जीत के काबिल हो जीतने वाला स्त्री या पुरूष न हो, समाज की इकाई हो, एक व्यक्ति हो। इसके लिए, स्त्री और पुरुष दोनों को समाज की हर विकृति के प्रति सजग रहना होगा, हर गड्ढे और खाई से बचकर एक ऐसा सुंदर संसार रचना होगा, जहां स्नेह हो, सौहार्द हो, सामंजस्य हो और खुशियां ही खुशियां हों।

नारी ने तो ठान लिया है कि वह इस विकृत समाज से निडर होकर लड़ेगी। आज वह निराश नहीं है, क्योंकि उसे अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने का मौका मिला है। अब वह दामिनी नहीं, दुर्गा शक्ति बनेगी। हिंदी कवयित्री रश्मि बड़थ्वाल ने लिखा है–

सैंकड़ों साल के युद्ध की थकान है मेरे भीतर,
और हजारों साल तक लड़ते रहने की ऊर्जा भी।

ऐसे में, पुरुष समाज का दायित्व बनता है कि वह उसके इस साहस और संकल्प में उसका साथ दे, ताकि उसकी सामर्थ्य, उसकी क्षमताओं और उसकी विशेषताओं का लाभ उसके परिवार, समाज और देश को मिल सके। स्वामी विवेकानंद जी के शब्दों में कहा जाए तो –The best thermometer to the progress of a nation is its treatment of its women.

अंत में, श्री मदन मोहन अरविंद के इन शब्दों के साथ, पुरूष वर्ग का आह्वान करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करती हूँ।

दीप जलाकर देखोगे तो तुम भी जानोगे,
अंधियारों के बीच उजाला अच्छा लगता है।

उप महाप्रबंधक (मा.सं.–रा.भा.)
कॉर्पोरेट कार्यालय, बीएचईएल
एडवेन्ट, नोएडा

राष्ट्रभाषा की जगह एक हिंदी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं।
– महात्मा गांधी

हिंदी इतनी समर्थ, फिर क्यों असमर्थ

हिंदी भाषा ने अपने उद्‌भव से लेकर आज तक लम्बी विकास यात्रा तय की है। हिंदी भाषा का विकास चिरकाल रहा है। हिंदी भाषा एवं भारतीय भाषाओं ने अपने विकास–यात्रा में कई चरणों को पार किया है। आज की जो हिंदी या मानक हिंदी है उसके विकास का इतिहास लगभग 1000 वर्ष पुराना है। हिंदी भारोपीय भाषा परिवार की भारत ईरानी शाखा की भारतीय आर्यभाषा है। भारतीय आर्यभाषा का प्राचीनतम रूप वैदिक संहिताओं में मिलता हैं। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के दो रूप वैदिक और लौकिक संस्कृत के रूप में मिलते है। प्राचीन आर्यभाषा के अंतर्गत संस्कृत भाषा का सुदृढ़ युग रहा है जिसमें वेद, उपनिषद, पुराण आदि की रचना हुई, इसीलिए इस भाषा को वैदिक संस्कृत भी कहा जाता है।

पालि बोध धर्म की भाषा है। पालि भाषा का संबंध मगध से था, इसीलिए इसे मगधी भाषा भी कहा गया है। बौद्ध धर्म का संदेश गौतम बुद्ध ने इसी पालि भाषा में दिया था। 'त्रिपिटक निकाय' की रचना इसी भाषा में हुई। सम्राट अशोक के शिलालेखों की भाषा भी पालि ही थी।

"मध्यकालीन आर्यभाषा के विकास की दूसरी स्थिति में जो जनभाषाएं साहित्य में प्रतिष्ठित हुई, उन्हें 'प्राकृत' कहते है। प्राकृत के दो अर्थ हैं एक तो जनभाषा और दूसरा प्रकृति या मूल से उत्पन्न अर्थात् संस्कृत की पुत्री।"1

प्राकृत प्रादेशिक विस्तार और विभिन्नता 'धर्म, क्षेत्र, प्रयोग, लेखन आदि' के आधार मुख्य रूप से शौरसेनी, पैशाची, मागधी, अर्द्धमागधी, महाराष्ट्री, केकय, अक्क, ब्राचड़ खस आदि नामो से जानी जाती है।

अपभ्रंश भाषा रचना काल 500 ई. से 1000 ई. तक माना जाता है।

अपभ्रंश का शाब्दिक अर्थ है – गिरा हुआ, बिगड़ा हुआ, विकृत, भ्रष्ट, च्युत, स्खलित, अशुद्ध आदि। शिष्ट समाज की शिष्ट भाषा प्राकृत के विरोध में विकसित जनभाषा को अपभ्रंश के नाम से जाना जाता है। जनसामान्य, आम जनता, अनपढ़, गंवार लोगों की भाषा को अपभ्रंश कहा गया। वह भाषा जो साहित्यिक प्रयोग की दृष्टि से सर्वथा वर्जित अनुपयुक्त, अक्षम तथा व्याकरणिक स्तर पर भ्रष्ट, त्याज्य, बिगड़ी हुई हो, अपभ्रंश कहलाती है।

डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' के अनुसार, "यद्यपि अपभ्रंश अपने मूल रूप में पन्द्रहवीं शताब्दी तक साहित्य की भाषा बनी रही, तथापि आठवीं शताब्दी से ही बोलचाल की भाषा से पृथक होकर उसके समानांतर साहित्य रचना का माध्यम बन गई थी।"2

अपभ्रंश का साहित्य विविधता का संसार है, अपार सौंदर्य का आगार है। जिसमें जैन कवियों के द्वारा रचित एक तरफ तो पुराण साहित्य है और दूसरी तरफ चरित काव्य का भण्डार है। विद्वानों ने अवहट्ठ भाषा को अपभ्रंश के दूसरे नाम या उसके बाद विकसित होने वाली भाषा की संज्ञा दी है। डॉ. हरदेव बाहरी के अनुसार "पश्चिम और मध्यदेशीय प्रदेश की लोकभाषा को अवहट्ठ कहा जाता था। इस प्रकार अपभ्रंश के उत्तरकाल में और आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के उदयकाल से पहले की, अर्थात् उस संधिकाल या संक्रांतिकाल की भाषा अवहट्ठ थी।"3

खड़ी बोली हिंदी का उदभव व विकास अपभ्रंश एवं अवहट्ठ का अगला चरण है। भारत वर्ष में बहुविध भाषा बोली जाती है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार अष्ठम सूची में 22 (बाईस) भारतीय भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। इनमें बंगला, उड़िया, असमिया, मराठी, गुजराती, उर्दू, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी, कश्मीरी, हिंदी, सिंधी, संस्कृत, कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली, मैथिली, संथाली, बोड़ो, डोगरी मुख्या भाषाएं हैं। इन सभी भाषाओ के सम्मिलित रूप के साथ हिंदी का प्रयोग भी संपूर्ण भारत में होता है। वस्तुतः हिंदी का अर्थ 'हिंद' की भाषा है एवं यह भाषा पूरे भारतवर्ष में अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक बोली और समझी जाती है। 'हिंदी' शब्द फारसी से आगत है।"4

'हिंदी' एक ऐसा शब्द है जिसका उद्‌भव संस्कृत शब्द ' सिंधु' से हुआ है। हिंदी शब्द का संबंध मूलतः नदी विशेष वाचक शब्द 'सिंधु' से माना गया है। ईरान से आने वाले व्यांपारियों ने ध्वनि परिवर्तन करके 'स' को 'ह' और सिंधु को हिंदु कर दिया। यही 'हिंदु' शब्द कालांतर मे अरबी फारसी के प्रभाव से 'हिंद' बना और इसी में 'इक' प्रत्यय से 'हिंदीक' बना जो ग्रीक में 'इंदीक','इंदिका', तथा अंग्रेजी में 'इंडिया बन गया। हिंदीक शब्द से क प्रत्यय के लोप होने से हिंदी शब्द बना जिसका अर्थ हिंदी भाषा से ही है।

हिंदी के प्रारम्भिक नाम है हिंदवी, हिंदुई, हिंदुस्तानी, दख्खिनी, हिंदी, रेख्ता, रेख्ती, उर्दू, कौरवी, नागरी, सरहिंदी, खड़ी बोली आदि है।

हिंदी भाषा पाँच उपभाषा वर्ग और उसके अंतर्गत सत्रह–अट्ठारह बोलियों से निर्मित और विकसित हुई है।

उपभाषाएं (भाषा–हिंदी)

पश्चिमी हिंदी	पूर्वी हिंदी	राजस्थानी	पहाड़ी	बिहारी
शौरसेनी अपभ्रंश	अर्द्धमागधी अपभ्रंश	शौरसेनी अपभ्रंश	नागर अपभ्रंश	मगधी अपभ्रंश
1. ब्रजभाषा	1.अवधी	1. मारवाड़ी	1. कुमायुंनी	1. भोजपुरी
2. हरियाणी	2.बघेली	2. जयपुरी	2. गढ़वाली	2. मगही
3. बुंदेली	3.छत्तीसगढ़ी	3. मेवाती		3. मैथिली
4. कौरवी		4. मालवी		
5. कन्नौजी				
6. दक्खिनी				

डॉ. हरदेव बाहरी के अनुसार "यह हिंदी ऐतिहासिक दृष्टि से युग–युग की मध्या देशीय भाषाओं संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि की उत्तराधिकारिणी है।"5

इन सबकी सम्पत्ति शब्दावली, मुहावरे, लोकोक्तियॉं, साहित्य और साहित्य की विविध विधाएं इसी भाषा को विरासत में मिली है। हिंदी सारे देश में व्याप्त है, व्यवहार में यह राष्ट्रभाषा अवश्य है। हिंदी पूरे हिंद की भाषा है परंतु राजनीतिक स्वार्थों के कारण कुछ राज्यों द्वारा इसे राष्ट्र भाषा की मान्यता प्रदान नहीं की है, फिर भी हिंदी भाषा अपने विस्तार क्षेत्र को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर और भी विशाल और समृद्ध करती जा रही है। हिंदी भाषा के विकास के बाद इसके कई रूप उभरकर आए है जैसेः–

1. राजभाषाः–

राजभाषा को अंग्रेजी में Official Language कहा जाता है। सरकारी कामकाज के लिए राजभाषा का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग मुख्य रूप से चार क्षेत्रों में अपेक्षित है– शासन, विधान, न्यायपालिका और कार्यपालिका। कई देशों में राजभाषा और राष्ट्रभाषा एक ही होती है परंतु भारत जैसे बहुभाषी देश में 'राजभाषा' की संवैधानिक घोषणा की गई है, राष्ट्रभाषा की नहीं। 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा स्वीकार कर लिया गया। संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 में राजभाषा संबंधी प्रावधानों का उल्लेख किया गया है, जिसमें हिंदी भाषा को सरकारी स्तर पर ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देने के प्रावधानों का उल्लेख किया गया है।

2. मानक भाषाः–

मानक भाषा का सामान्य अर्थ है आदर्श भाषा, शुद्ध भाषा, टकसाली भाषा और परिनिष्ठित भाषा, परिष्कृत भाषा, व्याकरणबद्ध भाषा आदि। अंग्रेजी के Standard Language शब्द का हिंदी पर्याय 'मानक' भाषा को ही कहा जाता है। 'मानक भाषा' किसी राष्ट्र और समाज की वह आदर्श भाषा होती है जिसका प्रयोग वहां के शिष्ट समुदाय द्वारा अपने साहित्यिक, प्रशासनिक, विधि, न्याय, व्यापारिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रों में औपचारिक कार्यों में समान रूप से किया जाता है। जो उच्चारण एवं लेखन में समरूप होता है।"6

3. संपर्क भाषाः

दो भिन्न भाषा–भाषी व्यक्ति किसी अन्य भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान–प्रदान करते है, वह भाषा सम्पर्क भाषा कहलाती है। सम्पर्क भाषा को अंग्रेजी में लिंग्वा फ्रेंका (Lingua-Franca) के हिंदी अर्थ के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। एक प्रदेश या एक भाषा के बोलने वाले लोग अन्य भाषा भाषियों से जिस भाषा के माध्यम से अपने विचारों का आदान प्रदान करते है, उसे लिंग्वा फ्रेंका अथवा संपर्क भाषा कहा जाता है। हिंदी अधिकांश भारतवासियों की संपर्क भाषा के रूप में भी कार्य करती है।

4. अंतर्राष्ट्रीय भाषाः

हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग में लाई जाने वाली विश्व की तीसरी भाषा बन चुकी है। विश्व के लगभग 180 विश्वविद्यालयों में हिंदी की उच्चस्तर की शिक्षा–दिक्षा दी जा रही है। फिजी, गुयाना, सूरीनाम, मारीशस, पाकिस्तान, त्रिनिनाद, भूटान, बांग्लादेश, नेपाल आदि देशों में हिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। आजीविका और रोजगार की तलाश में सुदूर देशों जैसे अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाडा में भी हिंदी का

प्रयोग तीव्रगति से बढ़ता जा रहा है। अमेरिका ने तो 12वीं में अनिवार्य विषय के तौर पर हिंदी भाषा को अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया है। रेडियो, टेलीविजन और कम्प्यूटर में इंटरनेट सेवाओं के कारण हिंदी भाषा आज देश ही नहीं वरन् विश्व की सार्वभौमिक भाषा बनती नजर आ रही है।

5. राष्ट्रभाषाः–

राष्ट्रभाषा का सामान्य अर्थ 'राष्ट्र की भाषा' से ही होता है। भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में बहुत सी भाषाएं है तो प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या वे सब राष्ट्रभाषा हैं? या फिर इन सभी भाषाओं में से राष्ट्रभाषा किसे कहेंगे और क्यों? बहुत से प्रश्न राष्ट्रभाषा के संदर्भ में कौंधते हैं। इन प्रश्नों के जवाब से ही हम राष्ट्रभाषा के सही और सार्थक अर्थ तक पहुँच सकते हैं'।

जब कोई बोली आदर्श और परिनिष्ठित भाषा बनकर राष्ट्रीय भावना का संबल बन जाती है। जिसका प्रयोग देश की अधिकांश जनता बहुप्रचलित भाषा के रूप में करती है, उस भाषा को राष्ट्रभाषा कहा जाता है। राष्ट्रभाषा से देश की राजनैतिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना का संचार होता रहता है। जो भाषा किसी देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है, जो संपूर्ण देश में संपर्क सेतु का आधार होती है जिस भाषा को देश का बहुसंख्यकवर्ग जानता है, समझता और अपने कार्य व्यापार के निष्पादन के लिए प्रयोग में लाता है, वह भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है। हिंदी भाषा के महत्व के कारण ही यह राष्ट्रीय एकता, आत्मसम्मान, भारतीय अस्मिता, सांस्कृतिक समन्वय, समाज सुधार के साथ–साथ देश की स्वतंत्रता में इसका अमूल्य और अभूतपूर्व योगदान सिद्ध हो गया है।

सबसे विलक्षण बात यह है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की पहल करने वाले महान सपूत स्वयं हिंदीतर भाषी लोग थे जैसे बंगला भाषा के रविन्द्रनाथ टैगोर, राजाराम मोहनराय, सुभाषचन्द्र बोस, बंकिमचंद चटर्जी, केशव चंद्र सेन आदि गुजराती भाषा के महात्मा गांधी, दयानन्द सरस्वती, मराठी भाषा के लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक आदि। हिंदी जन–जन की भाषा है, आम लोगों की भाषा है। अधिकांश भारतीय इसे बोलते हैं, समझते हैं और प्रयोग में लाते हैं फिर भी इसे संविधान में राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया गया है। यह सभी भारतीयों के लिए विचारणीय प्रश्न है। जिस पर गंभीर चिंतन मनन होना चाहिए।

हिंदी राष्ट्रभाषा बनने के लिए समर्थ और सशक्त हैः–

1. अधिकांश भारतीयों की भाषा हिंदी भाषा ही है।
2. हिंदी भाषा वह महासागर है जिसमें कई बोलियां और भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने की क्षमता है।
3. हिंदी का शब्द भण्डार संसार की सभी भाषाओं से भी विशाल एवं समृद्ध है।
4. विश्व की अन्य भाषाओं में सबसे पारदर्शी भाषा हिंदी भाषा ही है।
5. हिंदी भाषा ने ही देश को एकता के सूत्र में पिरोकर बांध रखा है।
6. देश की आजादी का शंखनाद और गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने का कार्य हिंदी भाषा ने ही किया।
7. विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की आधारशिला हिंदी भाषा ही है।
8. प्रिंटमीडिया, रेडियो, टेलीविजन एवं कम्प्यूटर, इंटरनेट सेवाओं में हिंदी भाषा के प्रयोग से आज हिंदी विश्व, की तीसरी उपयोगी भाषा बन चुकी है।
9. देश में ही नहीं बल्कि विदेशों के 180 विश्वविद्यालयों में उच्चतर शैक्षिक स्तर पर शिक्षा–दीक्षा हिंदी भाषा के माध्यम से दी जा रही है।
10. भारत की पहचान है हिंदी भाषा।

> हिंदी ही एक भाषा है जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है।
>
> – डॉ. ग्रियर्सन

राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को समर्थ बनाने के उपायः–

1. हिंदी भारत के अधिकांश लोगों की भाषा है इसलिए इसे राष्ट्र भाषा के रूप में अन्य भाषा–भाषी व्यक्तियों को गर्व और सम्मान के साथ इसे स्वीकार करना चाहिए क्योंकि आजादी का शंखनाद और श्रीगणेश करके गुलामी की बेड़ियों को इसी हिंदी भाषा की शक्ति ने तोड़ा था।
2. हिंदी अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा सरल, सहज, आसान, ग्रहणीय है। यह जन–जन की भाषा है जिसे शैक्षणिक स्तर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य, ऐच्छिक एवं त्रिभाषा सूत्र के रूप में सरकारी स्तर पर सख्ती से लागू करना चाहिए।
3. भारत बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश है इसलिए सभी भाषाओं को प्रोत्साहन हिंदी भाषा में अनुवाद द्वारा देना चाहिए उदाहरणस्वरूप दिल्ली विश्वविद्यालय, 'भाषा, साहित्य और संस्कृति' विषय में भारत की अन्य भाषाओं के साहित्य का पठन–पाठन हिंदी व अंग्रेजी के माध्यम से किया जा रहा है। प्रायोगिक विषय के तौर पर 'कार्यालयी भाषा' और 'अनुवाद' का पठन पाठन की शिक्षा–दीक्षा दी जा रही है जिससे हिंदी भाषा के साथ–साथ देश की अन्य भाषाओं को भी बढ़ावा मिल रहा है।
4. सरकारी विभागों में हिंदी की कार्यशालाओं का आयोजन समय–समय पर किया जाना चाहिए। प्रेरणा और प्रोत्साहन के रूप में पुरस्कार या नकद राशि का भुगतान किया जाना चाहिए।
5. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा विज्ञान एवं तकनीकी विषयों का अनुवाद पाठ्यक्रमों में किया जाना चाहिए जिससे हिंदी माध्यम से भी ऐसे विषयों की शिक्षा दी जा सके।
6. प्रत्येक विषय की हिंदी में शब्दावली तैयार करवानी चाहिए।
7. पाठ्यक्रम का माध्यम हिंदी भाषा को ही रखना चाहिए जिससे हिंदी भाषा का ज्यादा से ज्यादा विस्तार किया जा सके।
8. हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए इसके सरलीकरण पर जोर दिया जाना चाहिए।
9. रोजगार और व्यवसाय की भाषा के रूप में हिंदी भाषा को बढ़ावा देना चाहिए।
10. हिंदी भाषा के विकास में विद्यार्थीगण, अध्यापकगण एवं बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा बढ़ावा दिया जा रहा है लेकिन आधी आबादी को इससे वंचित रखा जा रहा है। मेरे सुझाव से हम अगर आधी आबादी (महिला वर्ग) अर्थात् हमारे घर परिवार की माँ, बहन, पत्नी, और बेटियों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर देंगे तो वे आपकी ही नहीं वरन वे राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के विकास में भी अपनी सहयोगी भूमिका को बखूबी निभाएंगी।
11. हिंदी समर्थ थी, समर्थ है, और समर्थ रहेगी। क्योंकि माँ कभी असमर्थ नहीं हो सकती। हिंदी हमारी माँ है, जो हमें जन्म देती है, हमारा पालन–पोषण करती है। आजीवन हमारी सहायता के लिए तत्पर रहती है। वो माँ सनातन समर्थ और सशक्त होती है और यही कार्य हमारी हिंदी भाषा कर रही है। हिंदी भाषा को हम माँ का दूसरा रूप मानकर आज और अभी से प्रतिज्ञा करें कि हम अपनी दोनों माताओं को समर्थ बनाने में अपना सफल योगदान देंगे।

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के शूल।'

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी उदभव, विकास और रूप–डॉ. हरदेव बाहरी (पृष्ठ संख्या–29)
2. वर्तमान संदर्भ में हिंदी–डॉ. मुकेश अग्रवाल (पृष्ठ संख्या–7)
3. हिंदी उदभव, विकास और रूप–डॉ. हरदेव बाहरी (पृष्ठ संख्या–37)
4. हिंदी शब्द अर्थ प्रयोग–डॉ. हरदेव बाहरी (पृष्ठ संख्या–68)
5. हिंदी भाषा मीडिया और सृजनात्मक लेखन–डॉ. मीना शर्मा (पृष्ठ संख्या–77)
6. भाषा साहित्य और संस्कृति, संपादन–विमलेश कांति वर्मा

चलें वक्त के साथ

वक्त देता जिसका साथ, जिस पर ईश्वर का हाथ
खुशियां उनके हर पल कदम चूमती हैं।

जिसने वक्त से आँख चुराई, उसने भुगती हैं कठिनाई
कठिन जिंदगी सरल होने के मंत्र ढूंढ़ती है।

शाम का सुबह से होता आगाज, सृष्टि जाने सारे राज
कभी रुके ना चक्र वक्त का, यही नियति है।

दुख में सुख की करके खोज, प्रसन्न रहते जो हर रोज
खुशियां उनके हर पल कदम चूमती है।

अच्छा–बुरा वक्त नहीं होता, इसका प्रभाव सभी पर होता
वक्त की गोद में बैठी दुनिया अविरल झूमती है।

चलो वक्त के अनुसार, प्रत्येक जीव से करके प्यार
ईश्वर का उपहार ये जीवन अमूल्य कृति है।

कर्मों से इतिहास है बनता, उज्ज्वल भविष्य की प्रेरणा लाता
वर्तमान के सतकर्मों से ही उन्नति है।

छोटों को प्यार, बड़ों का सम्मान, जहां नहीं बसता अभिमान
खुशियां उनके हर पल कदम चूमती हैं।

वक्त के साथ चलते हैं जो, सफल जिंदगी जीते हैं वो
खुशियां उनके हर पल कदम चूमती हैं।

'कंछिद' समझो वक्त का मोल, इसका एक–एक पल अनमोल
कभी किसी का मन ना दुखाए दिल को छू ले बात वही है।

कंछिद कुमार
हिंदी स्टेनो, प्रधान कार्यालय
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं. लि.

हिंदी विश्व की सरलतम भाषाओं में से एक है।
–आचार्य क्षिति मोहन सेन

हे नाथ! मेरी विनती सुन लो

कोई साईं कहे, कोई रब कहता, कहीं श्रीराम कहलाते हो।
कहीं कहलाते ईसा मसीह, कहीं भोले बन कष्ट मिटाते हो।।
जग के स्वामी हो तुम, तुम्हें दुनिया पूजती है।
हे नाथ मेरी विनती सुन लो, मेरा भी कल्याण करो।।
दुनिया में तबाही के मंजर, सबसे भारी आतंक का कहर,
तुम तो बसते हो कण–कण में, रखते हो पल–पल की खबर।।
जो चाहते हो वो होता है, कोई हंसता है कोई रोता है।
जिसको कोई अभिमान नहीं, सम्मान उसी का होता है।।
रक्षक हो दया के सागर हो, जन–जन के कष्ट निवारक हो।
ज्ञान के छींटे देकर के, अज्ञानियों का बेड़ा पार करो।।
धरती, अम्बर, जल और वायु, मालिक तुम चॉद सितारों के,
सूरज नवरंग रोशनी के, सृष्टि के सभी नज़ारों के।।
जब तक इस तन में प्राण रहे, चरणों में तुम्हारे ध्यान रहे।
मन भटके ना मायाजाल में, जिंदा सदा स्वाभिमान रहे।।
पापी कांपे तेरी ताकत से, कोई गुनाह करे ना तेरे डर से।
सुख–शांति रहे हर घर में, बस इतना उपकार करो।।
बढ़ते पापों की छाया में, लिप्त सभी मोह माया में,
सत्य मार्ग से भटक गए, कलयुग की छत्रछाया में।।
सत–पथ का मार्ग दिखाने को, सब पर कृपा बरसाने को।
हे भगवान तुम्हें आना होगा, दुष्टों के भ्रम मिटाने को।।
कहे 'कंछिद', तुम सबके दाता हो, हर जीव के भाग्य विधाता हो।
दुनिया तेरी गाथा गाती रहे, ऐसा कोई चमत्कार करो,
हे नाथ! मेरी विनती सुन लो, मेरा भी कल्याण करो।।

कंछिद कुमार
हिंदी स्टेनो, प्रधान कार्यालय
दि ओरिएण्ट्ल इंश्योरेंस कं. लि.

धरती की पुकार

थोड़ी–सी करवट क्या बदली, सारी दुनिया बिलख उठी।
पर मेरी भी तो मजबूरी थी, मैं बेचैनी में तड़प उठी।।
छीन रहे हो हरियाली तुम, जग विकास के नाम पर।
गाते हो तुम गीत प्रगति के, मेरे मौन की तान पर।।
क्या होगा तेरे इस जग का, यदि खोकर धैर्य मैं डोल पड़ी।
थोड़ी–सी करवट क्या बदली, सारी दुनिया बोल पड़ी।।

मौन धरे मैं सहती जाऊँ, तेरे अत्याचार को।
मैंने तो स्वीकार किया है, तेरे हर व्यवहार को।।
टुकड़े–टुकड़े करके मेरे, कहते हो तुम जीत गए।
भौतिकता की बड़ी जीत में, मानवता ही चूक गए।।
क्या होगा तेरे इस जग का, यदि खोकर धैर्य मैं डोल पड़ी।
थोड़ी–सी करवट क्या बदली, सारी दुनिया बोल पड़ी।।

जीत हुई है अहंकार की, नैतिकता का ह्रास हुआ।
टूट गया मूल्यों से नाता, कदाचार का वास हुआ।।
जब अरमानों की खातिर तुमने छोड़ा दीन–ईमान।
तब क्या सोचा था कि सह पाओगे मेरा फरमान?
क्या होगा तेरे इस जग का, यदि खोकर धैर्य मैं डोल पड़ी।
थोड़ी–सी करवट क्या बदली, सारी दुनिया बोल पड़ी।।

पर्वत–झरने–सागर–नदियां, सब कुछ तुम पर वारूँ मैं।
तेरी ही खुशियों की खातिर, तुमसे ही कुछ माँगूँ मैं।।
अपने कोमल आँचल में, नित प्यार से तुम्हें संभालूँगी।
पुत्र का धर्म निभाओ तुम, मैं माँ का धर्म निभाऊँगी।।
क्या होगा तेरे इस जग का, यदि खोकर धैर्य मैं डोल पड़ी।
थोड़ी – सी करवट क्या बदली, सारी दुनिया बोल पड़ी।।

चन्द्रकला मिश्र
उप महाप्रबंधक (मा.सं.–रा.भा.)
कॉर्पोरेट कार्यालय, बीएचईएल
एडवेन्ट, नोएडा

इरेडा
IREDA

बचपन

कहां गया ओ बचपन मेरे !
लेकर मस्ती भरे दिन सुनहरे।

झरते ही दो आँसू आँखों से, माँ दौड़ी चली आती थी।
पहले भरती आलिंगन में, फिर अमृत जैसा दूध पिलाती थी।।

पाकर ममता की मधुर खुराक
देह ही नहीं आत्मा भी तृप्त हो जाती थी।

लौटा दे मुझे वो ममता भरा आँचल,
सुरभि माँ के शरीर की।
जब से छूटी उसकी देहरी,
हुई मैं तो अनाथ–सी।।

किसे कब क्या चाहिए?
बिन कहे पापा, न जाने कैसे जान जाते थे ?
पंचतंत्र–हितोपदेश की कहानियों के बहाने
जीवन के नित नए पाठ पढ़ाते थे।।

एक मौका दे–दे फिर से
उनसे गुड़िया की जिद करने की
थामकर उनकी अंगुली
जीवन की फिसलनभरी राहों पर संभलने का।

दिन–रात, सताने–रुलाने वाली बहना
परीक्षा के दिनों में हर विध साथ निभाती थी।
बोल–बोलकर याद कराती हर सबक,
खुद ही किताब बन सामने खुल जाती थी।

मुझे फिर उसके पीछे बैठ साइकिल पे,
बर्फ का गोला खाने जाना है।
पहले जमकर लड़ना फिर सिरदर्द होने पर,
कनपटियों पर उसका स्नेहिल स्पर्श पाना है।

छूट गए वो संगी–साथी,
जिनके साथ अजब–अनोखी यारी थी।
जिस सखी से लड़ बैठे सुबह–सवेरे,
शाम उसी के साथ खेलते हुए गुजारी थी।
मुझे फिर पहन के पापा की ऐनक,
टीचर–टीचर का खेल रचाना है।

बांधकर माँ की साड़ी,
मेहमानों को 'रसना' पिलाना है।

रूठ न मुझसे प्यारे बचपन,
ले स्वागत में तेरे मैंने बाँहें फैलाईं।
अरे! ये देखो तूफान–मेल सी दौड़ती,
मेरी नन्हीं परी उनमें आ समाई।।

चल माँ, हम दोनों पकड़म–पकड़ाई खेलते हैं,
मेरे सारे दोस्त हैं गंदे, मुझसे नहीं बोलते हैं।

रात तू मुझको 'झांसी की रानी' की कहानी सुनाना,
कल की तरह फिर अपने वादे से मुकर न जाना।

साथ बिटिया के खेलते–कूदते,
मैंने वो निर्मल शांति पाई।
बरसने लगा नेह का निर्झर,
मन की कुटिया में फिर हरियाली छाई।।

धुल गए अवसाद के सब क्षण,
जीवन में नवल उत्साह छाया।
पंथ निहारती रही जिसका बरसों,
वो बचपन बिटिया के रूप में फिर लौटकर आया।।

मीतू माथुर बधवार
अनुवादक (राजभाषा विभाग)
स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
निगमित कार्यालय, दिल्ली

महिला सशक्तिकरण के बिना भारत का विकास संभव नहीं

बीसवीं शताब्दी का अंत होने को है और इक्कीसवी शताब्दी के स्वागत की तैयारी की जा रही है। हर शताब्दी के साथ ऐसा ही हुआ है। शताब्दियां ऐसे ही बीती हैं। हर शताब्दी का इतिहास रोमांच से भरा होता है। इतिहास इसका गवाह है।

मनुष्य को हमेशा आने वाले समय की चिंता रहती है। चिंतकों को आने वाले कल की चिंता सताए रहती है कि भावी समाज कैसा होगा। हम जहाँ रहते हैं, जिनके बीच में रहते हैं, वह समाज है। समाज मनुष्यों के मिल–जुलकर रहने का स्थान है। व्यक्ति अकेला नहीं रह सकता। आज व्यक्ति जो भी कुछ है, वह समाज के कारण है समाज से ही व्यक्ति है, उसका विकास या पतन है। बिना समाज के व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती। सभ्यता, संस्कृति, भाषा आदि सब समाज की देन है। समाज में फैली हुई कुरीतियां या कुप्रथाएं भी समाज के विकास के कारण हैं।

समाज की संस्थापना मनुष्य के पारस्परिक विकास के लिए हुई है। मनुष्य इस कारण ही आपसी सहयोग कर सका है और ज्ञान तथा विकास की धारा का अक्षुण्ण बनाए रख सका है। मनुष्य के समूचे विकास का आधार समाज है। समाज विरोधी तत्वों ने अपनी शक्ति को बढ़ावा दिया और सत्य मार्ग से व्यक्तियों को हटाने में सफलता प्राप्त की। इस तरह कुरीतियों से समाज घिरने लगा। इन कुरीतियों में बहुत से घटकों का समावेश किया जा सकता है। उनमें से एक कुरीति महिलाओं को हीन दर्जा का मान देकर उनके विकास में रोड़े पैदा करना है। इतना ही नहीं दहेज प्रथा, महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखना, स्त्री–पुरूष असमानता आदि द्वारा महिलाओं के प्रति असहज भाव व्यक्त करना सामाजिक कलंक है। इतिहास गवाह है महिलाओं को समाज में देवी का स्थान दिया जाता था। संसार के निसर्ग चक्र ने स्त्री पुरुष में कभी भेदभाव नहीं किया किंतु मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए स्त्री पुरुष में भेदभाव का विसर्ग निर्माण कर सामाजिक संतुलन को बिगाड़ने का काम किया है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ स्त्री की महत्ता सामने आई है। बिना स्त्री नहीं उद्धार। इस उक्ति के अनुसार समाज में स्त्रियों का स्थान सदैव सम्मानित रहा है। किंतु समाज के कुछ ठेकेदारों ने अपने स्वार्थ के लिए स्त्रियों को विकास से वंचित रखा है।

आज महिलाओं ने सिद्ध किया है कि वे किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। जहाँ पुरुष मानसिकता जा सकती है, वहां तक आज की स्त्री की मानसिकता भी जा रही है। आज प्रत्येक क्षेत्र में महिला अपना गौरवमयी योगदान दे रही है। इसीलिए तो देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति होने का सम्मान भी भारत की महिला को ही प्राप्त हुआ है। एक महिला का सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। उसे हर किरदार से गुजरना होता है। लेकिन हर किरदार में महिलाओं ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई है। इस किरदार में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मां की जिसके सामना सारा विश्व नतमस्तक होता है। साहित्य में भी स्त्री के इस अंश को बहुत अच्छी तरह से रेखांकित किया गया है।

भारत में महिला सशक्तिकरण की गतिविधियों को अधिक तेज करने की आवश्यकता है। इस दिशा में अनेकों सामाजिक संस्थाओं, संगठनों ने पहल भी की है। महिला सशक्तिकरण आज की आवश्यकता है क्योंकि अगर एक महिला सशक्त होगी तो एक पूरा परिवार सशक्त होगा। महिलाओं का सर्वाधिक प्रभाव बच्चों व हमारे समाज पर पड़ता है। अतः यदि महिलाएं सशक्त होंगी तो बच्चों में अच्छे मूल्य तथा एक अच्छे समाज की स्थापना होगी। निम्नलिखित बातों पर गौर करने से महिला सशक्तिकरण संभव होगा।

महिलाओं को शिक्षित करें, महिलाओं को समान अवसर प्रदान करें। महिलाओं पर हो रहे दुर्व्यवहार व अत्याचार को रोकें, महिलाओं को अपने अधिकारों का ज्ञान होना चाहिए, महिलाओं को शोषण के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत होनी चाहिए, महिलाओं में नेतृत्व गुण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, समाज में स्त्री पुरुष समान व्यवहार होना चाहिए, महिलाओं के स्वास्थ्य के ऊपर विशेष ध्यान देना चाहिए, महिलाओं को केवल बुनियादी शिक्षा ही नहीं अपितु विशेष शिक्षा के क्षेत्र को भी खुला रखना चाहिए, महिलाओं में निर्णय क्षमता को बढ़ाने के लिए व्यक्ति विकास कार्यक्रम को बढ़ावा देना चाहिए।

मनीश शंकरराव गवई
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
इंजीनियरिंग प्रोजेक्टस (इंडिया) लि.,
लोधी रोड, नई दिल्ली एवं
भारत सरकार को राष्ट्रीय युवा पुरस्कारार्थी

राजभाषा 'हिंदी' दशा–दिशा

डॉ. प्रभु चौधरी

आज शिक्षा का प्रमुख माध्यम हिंदी है। इसके अलावा, आम बोलचाल एवं सरकारी कार्य व्यवहार में हिंदी के साथ उर्दू व अन्य भाषाओं के शब्दों का भी इस्तेमाल होता है। यह अलग बात है कि हिंदी व उर्दू दो भाषाएं हीं बल्कि वे यहाँ की संस्कृति का अभिन्न अंग रही हैं। कहने का अर्थ यह है कि बदलते परिवेश के अनुसार हिन्दी के रूप, शैली व भावाभिव्यक्ति में काफी परिवर्तन आया है। (1) भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप को अपनाना या (2) पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखादि में हिंदी के साथ अंग्रेजी के शब्दों का खुले रूप में प्रयोग करना इस परिवर्तन के कुछ उदाहरण हैं।

इस प्रकार काफी आलोचनाएँ और विभिन्न प्रकार के विचार उभरकर सामने आ रहे हैं, परन्तु भाषाएँ प्रयोक्ता के लिए माध्यम हैं। प्रयोग व उदारवादी प्रवृत्ति के सहारे सरल व समृद्ध बनती हैं। दूसरे शब्दों में भाषा बहते पानी के समान है, वह जितनी सहज व सरल होगी उतने ही अधिक लोग अपनाएँगे और उसमें दैनिक कामकाज सहज व सरलता से हो सकेगा।

द्विभाषी पद्धति में अनुवाद की अहम भूमिका होती है। हिंदी के कार्य से जुड़े लोगों को हिंदी व अंग्रेजी में अपना काम करना होगा। अतः यदि उनके द्वारा किया गया अनुवाद पाठकों के लिए जितना अर्थपूर्ण व मूल के करीब होगा लोग उसे पढ़कर समझ सकेंगे। इसीलिए विज्ञान, कम्प्यूटर व आधुनिक ज्ञान–विज्ञान से जुड़े विषयों पर शब्द की संकल्पना को समझकर अनुवाद करने पर अधिक जोर दिया जाता है ताकि अनुवाद जटिल व दुरूह न हो।

सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का प्रचलन पहले से कायम है, इसीलिए उसके स्थान पर हिंदी को ले जाने के प्रयास चल रहे हैं। इसके तहत अंग्रेजी के अलावा हिंदी में काम करने पर प्रचलित प्रोत्साहन योजनाओं के अन्तर्गत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मासिक भत्ता अथवा त्रैमासिक आधार पर प्रोत्साहन राशि दी जाती है।

इस प्रसंग में हमारा प्रयास यही है कि अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी आ जाए। लोगों को यह बताया जाए कि अपनी भाषा में काम करना अधिक सरल है। इसके लिए हिंदी कार्यशालाएँ अभ्यासपरक होनी चाहिए। उनमें दैनिक कामकाज से जुड़े विषयों पर अभ्यास करवाया जाना चाहिए। कर्मचारी हिंदी में काम करना शुरू कर दें इस प्रयोजन से हमें बड़े धैर्य से हिंदी प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाना होगा। इसके लिए संबंधित कर्मचारी के स्थान पर प्रशिक्षण देने व प्रोत्साहन सुविधाओं को अधिक व्यावहारिक बनाया जाना चाहिए।

कार्य के दौरान पारिभाषिक शब्दों, कार्य–सहायिका की अधिक जरूरत होती है। अतः विभाग या कार्यालय में प्रचलित शब्दों की शब्दावली संबंधित कर्मचारियों को मुहैया कराई जाए। ए.एम.डी. में एक स्थान पर सफेद पटल (व्हाइट बोर्ड) रखा गया है जिस पर कार्यालय के विभिन्न अनुभाग व प्रयोगशाला में कार्यरत व्यक्ति अपने दैनिक कामकाज के बारे मे हिंदी में दूसरे कर्मचारियों के लिए जानकारी प्रस्तुत करते हैं ताकि सभी को एक दूसरे के कार्यों की जानकारी हो सके। मैं समझता हूँ यह भी कार्यान्वयन में सहायक होगा।

कर्मचारियों के लिए अधिक से अधिक भाषा पर आधारित प्रतियोगिताएँ आयोजित करना भी उचित होगा जैसे–निबंध लेखन, शुद्धलेखन, प्रश्नमंच, चित्र पर आधारित कहानी एवं दिए गए शीर्षक पर कविता लिखना, जोड़ी मिलाओ अथवा वर्तनी को ठीक करें जैसी प्रतियोगिताएँ रखी जा सकती हैं।

वैज्ञानिक संगोष्ठियों में निर्धारित विषय पर हिंदी में मूल लेखन को प्रोत्साहन दिये जाने से भी कार्यान्वयन में सुदृढ़ता आएगी। इसके लिए हम "हिंदी में ही सोचें और और उसे कागज पर उतारें" इस प्रक्रिया से अधिक सहज व अर्थपूर्ण लेख या शोध–पत्र तैयार हो सके।

सामयिक परिवेश में हमें सरकारी नीति के अनुरूप हिंदी में अधिक से अधिक कार्य द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में योगदान देना होगा। इसके लिए हर राजभाषा प्रेमी को हिंदी में स्वतः से कार्य करने का संकल्प लेना होगा।

"हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।" –माखनलाल चतुर्वेदी।

पिछले एक हजार वर्ष के इतिहास में भारत ही नहीं सारे दक्षिण–पूर्वी एशिया में और केन्द्रीय एशिया के कुछ भागों में भी विद्वानों की भाषा संस्कृत ही थी। अंग्रेजी कितनी ही अच्छी और महत्वपूर्ण क्यों न हो किन्तु इसे हम सहन नहीं कर सकते, हमें अपनी ही भाषा (हिंदी) को अपनाना चाहिए।

संविधान के अनुच्छेद 343 के अन्तर्गत किए गए प्रावधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी संघ की राजभाषा होगी तथा संविधान लागू होने के समय से पन्द्रह वर्ष की अवधि तक संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा। इस प्रावधान के अनुसार संविधान लागू होने के समय से पन्द्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति पर 26 जनवरी, 1965 से सभी शासकीय प्रयोजनों

के लिए हिंदी का प्रयोग प्रारंभ हो जाना चाहिए था, लेकिन इस व्यवस्था को लागू न होने देने तथा सन् 1965 के बाद भी संघ के सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग जारी रखने के उद्देश्य से राजभाषा अधिनियम, 1963 बनाया गया था।

राजभाषा अधिनियम के संबंधित विधेयक क्रमशः लोकसभा में 25 अप्रैल, 1963 को तथा राज्यसभा में 7 मई, 1963 को पारित होने के पश्चात् राष्ट्रपति की स्वीकृति से यह राजभाषा अधिनियम, 1963 के रूप में लागू हुआ।

इस अधिनियम में मुख्य रूप से उपबंध किए गए कि संसद तथा राज्यों की विधान सभाओं की सभी कार्यवाहियों की भाषा क्रमशः हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाएँ होंगी तथा उनका प्राधिकृत अंग्रेजी अनुवाद देना होगा। इस राजभाषा अधिनियम में यह भी उपबंध किया गया कि संविधान लागू होने के समय से पन्द्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के बाद भी हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा का सभी राज्यों में अभी सरकारी प्रयोजनों के लिए प्रयोग जारी रहेगा। इस अधिनियम में यह भी प्रावधान किया गया कि दस वर्ष की समाप्ति के बाद 30 सदस्यों की एक ऐसी समिति हिंदी की प्रगति की जांच करेगी, जिसकी नियुक्ति संसद के प्रस्ताव द्वारा होगी।

राजभाषा (संशोधन) अधिनियम का विधेयक लोकसभा में 27 नवम्बर, 1967 को प्रस्तुत किया गया, जो तमाम विरोधों, आन्दोलनों तथा सत्याग्रहों आदि के बावजूद 16 दिसम्बर, 1967 को पारित कर दिया गया। लोकसभा द्वारा पारित इस विधेयक को राज्यसभा ने 22 दिसम्बर, 1967 को पारित कर दिया गया। तदुपरांत 8 जनवरी, 1968 को इसे राष्ट्रपति की स्वीकृति के उपरांत गजट में अधिसूचित किया गया। यह अधिनियम राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 1967 कहा गया।

इस राजभाषा अधिनियम के पैरा (1) के अनुसार केन्द्रीय सरकार को हिंदी के प्रचार तथा विकास और संघ के विभिन्न सरकारी प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के लिए प्रतिवर्ष एक गहन तथा विस्तृत कार्यक्रम तैयार करने और इसे कार्यान्वित करने का दायित्व सौंपा गया। इस कार्यक्रम में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित कुछ लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं और अपेक्षा की जाती है कि वर्ष के दौरान यथासंभव इन लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया जाएगा।

इस अधिनियम की अन्य मदें कार्यालय के पत्राचार में हिंदी के प्रयोग की मात्रा, हिंदी टाइपराइटरों/टाइपिस्टों/आशुलिपिकों की उपलब्धता, हिंदी ज्ञान का स्तर, नियम संहिताओं, फार्मों, लेखन सामग्री आदि में हिंदी, परीक्षा तथा प्रशिक्षण में हिंदी माध्यम, द्विभाषी यंत्रों, विज्ञापनों की भाषा, हिंदी–शिक्षण,हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन तथा निरीक्षण की व्यवस्था, हिंदी कार्यशालाओं के आयोजनों तथा हिंदी पुस्तकों के क्रय आदि से संबंधित है।

– 15 स्टेशन मार्ग, महिदपुर रोड
जिला उज्जैन, (म.प्र.)

कौन सी बात कहाँ, कैसे कही जाती है।
ये सलीका हो, तो हर बात सुनी जाती है।।

प्रो. वसीम बरेलवी

काव्यानुवाद

Twinkle, twinkle, little star

Twinkle, twinkle, little star
How I wonder what you are!
Up above the world so high,
Like a diamond in the sky.
Twinkle, twinkle, little star
How I wonder what you are !
When the blazing sun is gone,
When he nothing shines upon,
Then you show your little light
Twinkle, twinkle, all the night-
Twinkle, twinkle, little star
How I wonder what you are !
As your bright and tiny spark...
Then the traveler in the dark,
Thanks for your tiny spark,
He could not see which way to go
Though I know not what you are,
Twinkle, twinkle, little star
How I wonder what you are !
In the dark blue sky you keep,
And often through my curtains peep,
For you never shut your eye,
Till the sun is in the sky.
Twinkle, twinkle, little star
How I wonder what you are !

जगमग करता लघु सितारा,
विस्मित करता मुझ को प्यारा !
दुनिया से ऊपर उच्च शिखर पर,
नभ में जड़ित हीरा न्यारा ।
जगमग करता लघु सितारा,
विस्मित करता मुझ को प्यारा !
तपता सूरज जब ढलता है,
उसकी किरणें जब मद्धिम पड़ती हैं
तब तुम अपने लघु प्रकाश से
करते जगमग सारी रात
जगमग करता लघु सितारा,
विस्मित करता मुझ को प्यारा !
जबकि तुम्हारा स्वच्छ और लघु प्रकाश.
रात्रि के पथिक को कराता दिशा-ज्ञान,
भटका पथिक लेकर तुम्हारा संज्ञान
प्रकट करता तुम को आभार
हालांकि, अज्ञात है मुझे तुम्हारा प्रकार
जगमग करता लघु सितारा
विस्मित करता मुझ को प्यार !
सघन नीले आसमान में तुम विचरण करते हो,
और अक्सर मेरे पर्दों में पदार्पण करते हो,
तब तक चक्षु खुले रहते तुम्हारे,
जब नभ में सूर्य देव पधारे
जगमग करता लघु सितारा,
विस्मित करता मुझ को प्यारा !

यश वर्धन
राजभाषा अधिकारी
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय–1, नई दिल्ली

''शहर''

चाह अब बस कि एक वृक्ष,
लगा हो अपने आँगन में।
हर दर्द, हर खुशी को,
एक साथ तो मिल जाएगा।।

न मिल्लत बची दोस्तों में
अब न परवाह रही रिश्तों की।
झिलमिलाती रोशनी में डूबा ये शहर,
बुझे दीयों का दर्द समझ न पाएगा।।

दर्द में भी न रोए सालों से,
चंद जाम में खुशी अब कैद है।
हर तरफ है लफ़्जों की किल्लत,
इस शहर में सब बेजुबान हैं।।

चाह अब बस कि एक वृक्ष,
लगा हो अपने आँगन में।
हर दर्द, हर खुशी को,
एक साथ तो मिल जाएगा।।

तुम्हारी पत्तियों और फूलों की महक,
हो अहसास कि कोई हो पास अपना।
न फिक्र अब धूप और बारिश की,
सफ़र आसां कुछ यूँ हो जाएगा।।

तुम्हारी डालियों पे चिड़ियों की चहक,
इठलाई कलियों की महक।
जीवन की ये झटक–मटक
कुछ चंचल शोख अदा सिखा जाएगा।।

जीवन की सीख ये बड़ी निराली
कभी धूप, कभी हर ओर हरियाली,
हुआ क्या, हो न कोई पास अपना

एक न एक साथ तो मिल जाएगा।।

चाह अब बस कि एक वृक्ष
लगा हो अपने आँगन में,
हर दर्द, हर खुशी को
एक साथ तो मिल जाएगा।।

– **मनीष चन्द्र**
उप प्रबन्धक (विधि)
इरेडा, नई दिल्ली

''माँ''

सबसे अनोखा सबसे अनमोल
इस जग में प्यार तुम्हारा है
सबसे प्यारा इस दुनिया में
सिर्फ अहसास तुम्हारा है...

ममता की छांव सुहानी, तुम्हारी गोद में गुजारी है
पढ़ना–लिखना, खेलना संग–संग
रूठना–मनाना हर पल हर रंग
हर याद में छवि तुम्हारी है...

हर समय हर इक पल, लिया ही है तुमसे माँ,
कभी तुम्हें कुछ दिया नहीं
माँगा तो हमेशा तुमसे, पर साथ तुम्हारा दिया नहीं...

नहीं मालूम था कि इतनी जल्दी और अचानक
बहुत–बहुत दूर चली जाओगी
कितना भी पुकारूँ तुमको, कितना भी तड़पूँ
लेकिन वापस नहीं फिर आओगी...

माना कि तुम दूर चली गयी हो मुझसे
इतनी कि मैं तुम्हें छू भी नहीं सकती
पर हर दुख में, हर खुशी में,
सबसे पहले मन के अक्स में
छवि तुम्हारी अंकित रहती...

जो भी पल हमने साथ गुजारे
अब तो सिर्फ यादें हैं...
जितना भी आपका प्यार पाया
उससे महकती मेरी सांसें हैं...
माँ तुम्हें कितना चाहती हूँ,
जीते–जी तुमसे कह नहीं पाई
पर एक पल भी ऐसा नहीं बीतता
जो मैं तुमसे अलग हो पाई...

सच में माँ,
सबसे अनोखा, सबसे अनमोल, सबसे प्यारा
इस जग में प्यार तुम्हारा है।
आज तन्हा होकर भी मैं खुश हूँ शायद
क्यों कि हर पल संग अहसास तुम्हारा है।।

"सादर समर्पित"

बिन्दु विमल पत्नी – श्री आर.के. विमल
उप महाप्रबंधक (समन्वय)
इरेडा, नई दिल्ली

शिक्षा के माध्यम का प्रश्न

कृपाराम लहकरा

शिक्षा का प्रसार किसी न किसी रूप में आदिकाल से रहा है। गुरुकुल और ऋषि मुनियों के आश्रम शिक्षा के मुख्य केंद्र रहे हैं। सारे देश में संस्कृत टोल और पाठशालाएं भी काम करती थी। शहरों और गांवों में रहने वाले प्रत्येक पंडित का घर छोटी–मोटी पाठशाला होता था। धनी–मानी लोग अपने घरों पर भी मौलवी रखा करते थे जो फारसी पढ़ाते थे। पाठ्यक्रम के नाम पर व्याकरण, साहित्य, दर्शन, ज्योतिष और आयुर्वेद व साधारण गणित आदि पढ़ाए जाते थे। जहां तक इतिहास का सवाल था पुराणों में जो कुछ लिखा हुआ था अथवा बाप–दादों से अतिरंजित कथाओं के रूप में जो कुछ सुनने को मिल जाता था, वही इतिहास विषयक शिक्षा थी। धार्मिक शिक्षा के नाम पर मुसलमानों के यहां कुरान और हिंदुओं के यहां स्तोत्र रटवाने की परिपाटी थी। मुगलों के समय में शासन की भाषा फारसी रही थी। फारसी पढ़े–लिखे लोग आसानी से मिल जाते थे। इसलिए ईस्ट इंडिया कंपनी, जो भारत में मसालों व कपड़ों के व्यापार के लिए भारत आई, ने भी फारसी को ही अपनी राजभाषा बनाया।

काफी लम्बे समय तक शिक्षा की ओर अंग्रेजी शासन का ध्यान ही नहीं गया। सन् 1781 में वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता में एक मदरसा खोला जिसमें एक मौलवी और 40 मुस्लिम छात्र थे और जिसका उद्देश्य मुसलमानों को धार्मिक शिक्षा देना था। 1791 में बनारस के रेजिडेंट जोनाथन डंकन के कहने पर लार्ड कार्नवालिस ने बनारस में हिंदुओं के लिए भी एक संस्कृत कॉलेज की स्थापना की। कंपनी सरकार ने एक कॉलेज 1824 ई. में कलकत्ता में और दूसरा कॉलेज 1825 ई. में दिल्ली में इस उद्देश्य से खोला कि भारत की तीन प्राचीन भाषाओं (संस्कृत, अरबी और फारसी) की शिक्षा दी जा सके। कलकत्ता में प्राच्य और पाश्चात्य के झगड़े के चलते लार्ड मैकाले के परामर्श से लार्ड विलियम बैंटिक ने सन् 1835 ई. की अपनी घोषणा में एलान किया कि भारतवर्ष में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगा। 1813 ई. से लेकर 1854 ई. तक के काल में मुख्य प्रश्न दो ही थे, पहला यह कि शिक्षा का माध्यम क्या हो और दूसरा यह कि शिक्षा के तरीके क्या हों। उन दिनों भारत के शासकों में तीन प्रकार के मत प्रचलित थे।

- हेस्टिंग्स और मिंटो संस्कृत, फारसी और अरबी के पक्षधर थे
- मनरों और एलफिस्टिन के विचार थे कि संस्कृत, अरबी और फारसी के द्वारा भारतवासियों की शिक्षा व्यापक नहीं बनाई जा सकती। अतः शिक्षा का माध्यम आधुनिक भाषाएं होनी चाहिए। यदि यूरोप के ज्ञान को भारतीय जनता तक ले जाना है तो यह कार्य जनता की चालू भाषाओं के जरिए किया जा सकता है।
- तीसरा दल चार्ल्स ग्रांट के अनुयायियों का था जो यह मानता था कि नवीन विधाएं भारतवासियों को अंग्रेजी के ही माध्यम से दी जा सकती है। यह दल काफी कमजोर था, किंतु, जब मैकाले आया उसने इस पक्ष को सबल बना दिया। अपनी भाषागत कठिनाइयों का जो समाधान भारत आज खोज रहा है उस पर सबसे पहले एलफिंस्टन की दृष्टि गई थी। वे 1819 ई. से 1827 ई. तक बम्बई के गवर्नर थे और उन्होंने अपनी शिक्षा रिपोर्ट में कहा था कि
  - नैतिक और प्राकृतिक विज्ञानों की पुस्तकें भारत की आधुनिक भाषाओं में तैयार करवाई जाएं और उन्हीं भाषाओं के द्वारा भारत की जनता को शिक्षित किया जाए।
  - जो लोग एक क्लासिक भाषा के रूप में अंग्रेजी सीखना चाहें तथा अंग्रेजी सीखकर यूरोपीय ज्ञान के संपर्क में सीधे आना चाहे उनके लाभ के लिए अंग्रेजी के स्कूल खास तौर से अलग खोले जाए।
  - एलफिंस्टन ने जन–शिक्षा के निमित्त "बम्बई नेटिव एजुकेशन सोसाइटी" की स्थापना की थी जिसकी नीति यह थी कि भारतीय जनता की मानसिक और नैतिक उन्नति के कार्य में अंग्रेजी का स्थान गौण है। जनता में पाश्चात्य ज्ञान का प्रचार केवल अंग्रेजी के द्वारा होना असंभव है।

इस सोसाइटी ने अपनी 1825–26 ई. की रिपोर्ट में कहा था कि पाश्चात्य साहित्य, दर्शन और विज्ञान की बातें भारतीय छात्रों को सुगमता से तभी प्रदान की जा सकती है जब शिक्षा का माध्यम अपनी मातृभाषा हो।

तत्कालीन बम्बई की शिक्षा नीति पर कैप्टन कैंडी ने एक रिपोर्ट में स्पष्ट लिखा था कि "भारत के नैतिक और बौद्धिक विकास के कार्य में अंग्रेजी केवल विषय और विचार दे सकती है वह शिक्षा का माध्यम नहीं बन सकती। जिस भाषा में जनता शिक्षित की जाएगी वह

इरेडा IREDA

भाषा जनता की मातृभाषा ही हो सकती है।"

एलफिंस्टन की नीति से निम्न दो बातें स्पष्ट रूप से झलकती है।

1) ज्ञान की सामग्री हमें अंग्रेजी के भंडार से लेनी है।

2) जनता तक यह ज्ञान हमें आधुनिक भाषाओं द्वारा पहुँचाना है।

सन् 1838 में विलियम बैंटिक द्वारा बंगाल में शिक्षा सर्वेक्षण कार्य के लिए नियुक्त एडम ने भी सरकार को प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में कहा था कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए लेकिन चार्ल्स ग्रांट, वार्डन और मैकाले के कारण एलफिंस्टन की नीति नहीं चल सकी। यदि वह चल गई होती तो भारत उस कठिनाई में नहीं फँसता जिसमें आज वह गिरफ्तार है। दुख इस बात का है कि मैकाले ने एलफिंस्टन का पीछा आज भी नहीं छोड़ा है। मैकाले के अनुयायी आज भी प्रबल है और एलफिंस्टन के समर्थक आज भी लाचार हैं। भारत सरकार की राजभाषा नीति, शिक्षा नीति से अलग है। इसके पीछे सरकार का मंतव्य स्पष्ट है कि किसी भाषा विशेष के ज्ञान के आधार पर किसी को सरकारी सेवा में प्रवेश के अधिकार से वंचित नहीं रखा जा सकता। लेकिन सरकारी सेवा में आने के बाद कर्मचारी से अपेक्षा की जाती है कि राजभाषा का कार्यसाधक ज्ञान हासिल करे। इसमें व्यावहारिक कठिनाई है कि जिस व्यक्ति को मातृभाषा का केवल काम चलाऊ ज्ञान है अथवा जिसने मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाई न की हो वह भला राजभाषा का सही मायने में कार्यसाधक ज्ञान कैसे हासिल कर पाएगा। मातृभाषा अथवा भारतीय भाषाओं में से किसी एक या दो भाषा का अच्छा ज्ञान होने से हिंदी व अन्य भारतीय भाषा आसानी से सीखी जा सकती है। जहां तक प्रौद्योगिकी के आदान–प्रदान का सवाल है वह जिस भाषा में उपलब्ध हो हमें ग्रहण कर लेनी चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि उस प्रौद्योगिकी को हिंदी अथवा भारतीय भाषाओं में अनुवाद कर प्रयोक्ता स्तर तक पहुँचाए इससे हिंदी व भारतीय भाषाओं को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने में निश्चय ही मदद मिलेगी। जब उच्च शिक्षा का माध्यम हिंदी अथवा भारतीय भाषाएं होंगी तो हिंदी को केंद्र सरकार की तथा प्रांतीय भाषाओं को प्रांतीय सरकारों की राजभाषा स्वीकार करना सार्थक होगा और उसका कार्यान्वयन भी आसान व प्रभावी होगा। हिंदी, केवल हिंदी दिवस तथा कार्यशला आदि तक सीमित नहीं रहेगी।

यह सत्य है कि आम मनोरंजन के साधनों और बोल–चाल में क्षेत्रीय भाषाओं तथा हिंदी का प्रचलन बढ़ा है। अधिकांश राज्य सरकारों ने भी अपना कामकाज संबंधित क्षेत्रीय भाषा में करना प्रारंभ कर दिया है। संघ के सरकारी कामकाज में हिंदी प्रयोग की स्थिति को और अधिक बेहतर तभी बनाया जा सकेगा जब एलफिंस्टन की जन–शिक्षा नीति के तहत भारतीयों के लिए हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाया जाएगा।

उप महाप्रबंधक (मा.संसा.–रा.भा.)
बीएचईएल, उद्योग क्षेत्र
लोधी रोड, नई दिल्ली

प्रत्येक व्यक्ति की बात सुनो परंतु किसी से कुछ मत कहो। प्रत्येक व्यक्ति द्वारा निंदा सुन लो पर अपना निर्णय सुरक्षित रखो।

– शेक्सपियर

हिंदी उत्सव 14 से 28 सितंबर, 2015

हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार प्रत्येक वर्ष हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस समारोह मनाया जाता रहा है।

इरेडा में वर्ष 2015 में भी 14 सितम्बर, 2015 को हिंदी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह का शुभारंभ प्रबंधक (राजभाषा), संगीता श्रीवास्तव द्वारा सभी इरेडा कर्मियों के स्वागत से हुआ। समारोह का उद्घाटन इरेडा के कॉर्पोरेट कार्यालय के बोर्ड रूम में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय श्री के.एस. पोपली द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

सुसज्जित बोर्ड रूम में दीप प्रज्वलन के समय इरेडा के वरिष्ठ अधिकारीगण एवं सभी इरेडा कर्मी उपस्थित थे।

हिंदी दिवस 14 सितम्बर, 2015 के अवसर पर गृह मंत्री, भारत सरकार, श्री राजनाथ सिंह, द्वारा जारी हिंदी संदेश को निदेशक (वित्त), श्री एस.के. भार्गव, इरेडा द्वारा तथा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार, श्री पीयूष गोयल द्वारा जारी हिंदी संदेश को महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री पी. श्रीनिवासन द्वारा पढ़ा गया।

उद्घाटन समारोह में प्रबंधक (राजभाषा) ने हिंदी पखवाड़ा, 2015 के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं/कार्यशाला के विषय में बताया। संसदीय राजभाषा समिति की संस्तुतियों के आधार पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार राशियां भी बढ़ा दी गईं, जिससे सभी कर्मियों का हिंदी प्रतियोगिताओं की ओर आकर्षण बढ़ा और राजभाषा के प्रति सम्मान में वृद्धि हुई।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी इरेडा के एकेबी, नई दिल्ली स्थित कॉर्पोरेट कार्यालय में 14 से 28 सितंबर, 2015 तक हिंदी उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान हिंदी के प्रचार–प्रसार को और अधिक बढ़ाने के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें इरेडा के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। सभी इरेडा कर्मियों के लिए कुल 06 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं तथा सभी इरेडा कर्मियों के लिए 01 कार्यशाला भी आयोजित की गई। इसके अलावा इरेडा कर्मियों के बच्चों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता तथा अन्य रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए गए।

दुनिया की ज्यादातर महत्वपूर्ण चीजें उन लोगों द्वारा प्राप्त की गई हैं
जो कोई उम्मीद न होने के बावजूद अपने प्रयास में लगे रहे ।

– डेल कार्नेगी

हिंदी पुरस्कार वितरण

हिंदी उत्सव के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को इरेडा के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। हिन्दी उत्सव 14 से 28 सितम्बर, 2015 के दौरान कुल 06 हिन्दी प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक अयोजन किया गया। जिसमें इरेडा कर्मियों ने बड़े ही उत्साहपूर्वक भाग लिया। कुल 06 हिन्दी प्रतियोगिताओं ने 36 प्रतिभागियों ने पुरस्कार जीते।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं की सूची

''राजभाषा अनुभाग की ओर से हार्दिक बधाई''

दिनांक 14.09.2015 को हिंदी में निबंध प्रतियोगिता			
क्र. सं.	विजेताओं के नाम	श्रेणी	पुरस्कार राशि
1.	श्री संजय कुमार आर्य	प्रथम	5000/-
2.	श्री देवेन्द्र कुमार नारनोलिया	द्वितीय	4000/-
3.	श्री अभिषेक कुमार	तृतीय	3000/-
4.	श्री मुकेश यादव	प्रोत्साहन	2000/-
5.	श्री हजारी लाल	प्रोत्साहन	2000/-
6.	श्री अमित दुबे	प्रोत्साहन	2000/-

दिनांक 16.09.2015 को हिंदी में अनुभूति वर्णन प्रतियोगिता			
1.	श्री शालीन भोला	प्रथम	5000/-
2.	श्रीमती प्रतिमा बाली	द्वितीय	4000/-
3.	श्री मुकेश यादव	तृतीय	3000/-
4.	श्री अभिषेक कुमार	प्रोत्साहन	2000/-
5.	श्री नरेन्द्र अहीर	प्रोत्साहन	2000/-
6.	श्री श्रवण कुमार	प्रोत्साहन	2000/-
दिनांक 18.09.2015 को हिंदी में पावर प्वाइंट प्रस्तुति प्रतियोगिता (विषय : अक्षय ऊर्जा का भविष्य/वर्षा जल संचयन)			
1.	श्री नवीन भल्ला	प्रथम	5000/-
2.	श्री घनश्याम गुप्ता	द्वितीय	4000/-
3.	श्री हरीश कुमार चावला	तृतीय	3000/-
4.	श्री संजय कुमार	प्रोत्साहन	2000/-
5.	श्री संजय कुमार आर्य	प्रोत्साहन	2000/-
6.	श्री देवेन्द्र कुमार नारनोलिया	प्रोत्साहन	2000/-
दिनांक 21.09.2015 को हिंदी में संस्मरण प्रतियोगिता			
1.	श्री मनीष लाल	प्रथम	5000/-
2.	श्री अमित दुबे	द्वितीय	4000/-
3.	श्री देवेन्द्र. कुमार नारनोलिया	तृतीय	3000/-
4.	श्री मुरली कुमार	प्रोत्साहन	2000/-
5.	श्री चरनजीत सिंह	प्रोत्साहन	2000/-
6.	श्री आई. जॉन बास्को	प्रोत्साहन	2000/-
दिनांक 22.09.2015 को सामान्य हिंदी व राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता			
1.	श्री संजय कुमार आर्य	प्रथम	5000/-
2.	श्री सतीश कुमार कलावत	द्वितीय	4000/-
3.	श्री हरीश कुमार चावला	तृतीय	3000/-
4.	श्रीमती सुप्रीत कौर	प्रोत्साहन	2000/-
5.	श्रीधर मदीशेट्टी	प्रोत्साहन	2000/-
6.	श्री राम भजन सिंह	प्रोत्साहन	2000/-
दिनांक 23.09.2015 को वाद–विवाद प्रतियोगिता			
1.	श्री घनश्याम गुप्ता	प्रथम	5000/-
2.	श्री संजय कुमार आर्य	द्वितीय	4000/-
3.	श्री नवीन भल्ला	तृतीय	3000/-
4.	श्री हरीश कुमार चावला	प्रोत्साहन	2000/-
5.	श्री अमित दुबे	प्रोत्साहन	2000/-
6.	श्रीधर मदीशेट्टी	प्रोत्साहन	2000/-

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 01 जनवरी, 2015 को इरेडा का राजभाषायी निरीक्षण किया गया । माननीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के उपाध्यक्ष, डॉ. सत्यनारायण जटिया, दूसरी उप समिति के विशेषज्ञ, प्रो. श्री सूरजभान, अवर सचिव, श्री प्रकाश शुल्क तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार से वैज्ञानिक 'डी' एवं प्रभारी (रा.भा.), एस.के. भारद्वाज, वरि. हिंदी अनुवादक, सुश्री सुजाता मट्टू की उपस्थिति में निरीक्षण बैठक संपन्न हुई ।

इरेडा की ओर से अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री के. एस. पोपली के साथ निदेशक (तकनीकी), श्री बी.वी. राव, निदेशक (वित्त), श्री एस.के. भार्गव, महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री पी. श्रीनिवासन, उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा), डॉ. आर. सी. शर्मा और प्रबंधक (राजभाषा), सुश्री संगीता श्रीवास्तव एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे ।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय ने समिति सदस्यों और पदाधिकारियों का पुष्प गुच्छ और शॉल से स्वागत किया और इरेडा के विषय क्षेत्र से सभी का परिचय कराया । इसके साथ–साथ वाल माउंटेड स्क्रीन पर इरेडा के बारे में प्रस्तुतीकरण दियाया जाता रहा । उप समिति ने प्रस्तुतीकरण का गहनता से अवलोकन किया और राजभाषायी प्रयासों की सराहना की । इरेडा की ओर से हिंदी में कार्यों की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका माननीय संसदीय समिति द्वारा निरीक्षण किया गया । तदुपरांत, उप समिति ने निरीक्षण प्रश्नावली में इरेडा द्वारा दी गई जानकारी पर चर्चा की । चर्चा के दौरान समिति ने इरेडा कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की तथा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में तेजी लाने के लिए मार्गदर्शन एवं सुझाव भी दिए । अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ निरीक्षण बैठक समाप्त हुई ।

प्रकृति

पहियों पर भागती–दौड़ती इस रवानगी में,
इक पल का मौका न चुरा पाई कि
तुमसे रूबरू कर लूं।
कुछ अपनी कुछ तुम्हारी खास
कुछ खट्टी–मीठी बातें कर लूं।

हर सुबह तुम आती रहीं नरम–नरम एहसास के साथ,
ओ मेरी प्यारी ओस।
पर मैं ही बढ़ न सकी हरी घास की ओर
कि सुबह–सुबह तुम्हारा प्यार ले सकूं।।

और तुम मेरी प्यारी दोस्त सुबह की
वो शीतल हवा!
जो जीवन शक्ति से परिपूर्ण
मंद–मंद छाई रहती हो हर सुबह,
मुझे छू के चली जाती हो।
अफ़सोस करके कि मैं पहियों पर
चलती जाती हूँ, चलती जाती हूँ......

और तुम मेरे सबसे प्यारे दोस्त
चमकते सूरज!
रहते हो हर पल साथ मेरे।
मैं तुम्हें नमन करूं या न करूं
दोस्ती पूरी निभाते हो चाहे
मैं ध्यान दूं, न दूं।

और सतरंगी दोस्तों की मेरी
वो दुनिया!
हजारों फूल–कलियों से भरा उपवन
तो बस राह ही देखता रहता है मेरी ओर
मैं इक पल तो रुककर
उनसे रूबरू होकर बात करूं।
और मेरे प्यारे पंछी दोस्त!
बस कभी–कभी मैं उनका ख्याल करके
उनके लिए दाना और पानी रखती हूं
अपनी छत पर।

पहियों पर दौड़ने से पहले
वो भी यही सोचते हैं उड़ते–उड़ते
इक पल तो रुककर मैं उनसे
रूबरू होकर बात कर लूं।।

शाम ढले जब रात हो, तो आते हैं
मेरे प्यारे दोस्त चांद–सितारे।
कहते हैं आ जाओ पास हमारे
ले लें तुम्हें आगोश में सारे।।

पर हाय! मैं तब भी न कर पाती
उनसे बात चाहकर लाख।
मन चाहता तो बहुत है
कि इक पल तो मैं रुक जाऊँ
और रूबरू होकर उन्हें बतलाऊँ
कि कितना चाहती हूँ मैं भी उन्हें
कि हर पल वो मेरे साथ हैं।।

ये एहसास ही तो
देता है ताकत मुझे,
कि पहियों पर भागती–दौड़ती इस
रवानगी में अकेले नहीं
प्रकृति के सारे मित्र साथ हैं मेरे।

– संगीता श्रीवास्तव
प्रबंधक (राजभाषा)
इरेडा, नई दिल्ली

चमत्कारी पेड़–पौधे

भारत को आदिकाल में जम्बूद्वीप कहा जाता था क्योंकि यहां जामुन बहुतायत से होता है। प्रकृति ने विभिन्न जड़ी–बुटियाँ, फल–फूल पेड़ हमें दिए हैं, जो मनुष्य को स्वस्थ एवं दीर्घायु रखने में चमत्कारी कार्य करते हैं। 'चमत्कारी पेड़–पौधे' की इस श्रृंखला में क्रमिक तरह से जानकारी दी जा रही है। इस श्रृंखला में ई–पत्रिका के इस अंक में 'जामुन' फल के बारे में बताया जा रहा है।

जामुन स्वास्थ्य के लिए चमत्कारी फल

जामुन फल का मधुमेह रोग में विशेष उपयोग किया जाता है। यूनानी एवं आयुवेदिक प्रणाली में इसे डायरिया तथा अन्य पाचन संबंधी बीमारियों के उपचार के लिए प्रयोग किया जाता है। इसकी छाल, बीज एवं पत्तियों के सेवन से रक्त शर्करा एवं मूत्र शर्करा दोनों में कमी होती है। विभिन्न अध्ययनों से ऐसा पता चला है कि इसके बीजों में एल्कोलोयड होता है जिसके कारण रक्त शर्करा कम होती है, इसके फल में आक्जेलिक एसिड, टैनिक एसिड, गैलिक एसिड, एस्कालौयड मिनिरल्स व विटामिंस पाए जाते है, जैसे–मैग्नीशियम, जिंक, आयरन, कैल्शियम, सोडियम, पोटेशियम। जामुन को कफ एवं पित्त दोष में सिफारिश की जाती है। अल्सर, कोलाइटिस जैसे रोगों में जामुन की पत्तियॉं बेहद लाभकारी होती है। जामुन की राख को मंजन में प्रयोग किया जाता है क्योंकि ये दांतों एवं मसूढों को मजबूती प्रदान करना है। जामुन के बीजों का चूर्ण मुहॉसों को दूर करने के लिए प्रयोग किया जाता है। जामुन में फ्लेवेनायड भी पाया जाता है, जिससे कई बीमारियॉं दूर होती है। जामुन से जैलो, स्क्वायश बनाए जाते हैं। जामुन की कैंडी भी बनाई जाती है। ह्रदय रोग को दूर करता है तथा उच्च रक्तचाप इत्यादि में लाभकारी है। यकृत, नैक्रोसिस, फ्राइबरोसिस जैसे रोगों से बचाव करता है। बायोकैमिकल, फाइटो कैमिकल जैसे पॉली फिनाल जामुन में होता है, जो कैंसर जैसी बीमारी से बचाता है। जीरा,काला नमक के साथ खाने से एसिडिटी दूर होती है। कफ एवं अस्थमा के लिए जामुन का फ्रैश (ताजा) जूस बहुत लाभकारी है अधिक वात दोष वालों को जामुन कम खाना चाहिए। जामुन खाने के उपरांत दूध नहीं पीना चाहिए। सड़क के किनारे बिकने वाले जामुन से परहेज करना चाहिए। खाली पेट जामुन का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जामुन की एंटीबायोटिक क्षमता के कारण इससे होम्योपैथिक व आयुर्वेदिक दवाएं बनाई जाती हैं।

क्रमश...

विश्व पर्यावरण दिवस

सारी दुनिया में 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिन लोग स्टाकहोम, हेलसेंकी, लन्दन, विएना, क्योटो जैसे सम्मेलनों और मॉन्ट्रियल प्रोटोकाल, रियो घोषणा पत्र, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम इत्यादि को याद करते हैं। गोष्ठियों में सम्पन्न प्रयासों का लेखा–जोखा पेश किया जाता है। अधूरे कामों पर चिन्ता व्यक्त की जाती है। समाज का आह्वान किया जाता है ।

लोग कहते हैं कि इतिहास अपने को दोहराता है। कुछ लोगों का मानना है कि इतिहास से सबक लेना चाहिए। इन दोनों वक्तव्यों को ध्यान में रख पर्यावरण दिवस पर धरती के इतिहास के पुराने पन्नों को पर्यावरण की नजर देखना–परखना या पलटना ठीक लगता है। इतिहास के पहले पाठ का संबंध डायनासोर के विलुप्त होने से है।

वैज्ञानिक बताते हैं कि लगभग साढ़े छह करोड़ साल पहले धरती पर डायनासोरों की बहुतायत थी। वे ही धरती पर सबसे अधिक शक्तिशाली प्राणी थे । फिर अचानक वे विलुप्त हो गए। अब केवल उनके अवशेष ही मिलते हैं। उनके विलुप्त होने का सबसे अधिक मान्य कारण बताता है कि उनकी सामुहिक मौत आसमान से आई। लगभग साढ़े छह करोड़ साल पहले धरती से एक विशाल धूमकेतु या छुद्र ग्रह टकराया।

उसके धरती से टकराने के कारण वायुमण्डल की हवा में इतनी अधिक धूल और मिट्टी घुल गई कि धरती पर अन्धकार छा गया। सूरज की रोशनी के अभाव में वृक्ष अपना भोजन नहीं बना सके और अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए। भूख के कारण उन पर आश्रित शाकाहार डायनासोर और अन्य जीवजन्तु भी मारे गए । संक्षेप में, सूर्य की रोशनी का अभाव तथा वातावरण में धूल और मिट्टी की अधिकता ने धरती पर महाविनाश की इबारत लिख दी। यह पर्यावरण प्रदूषण का लगभग साढ़े छह करोड़ साल पुराना किस्सा है ।

आधुनिक युग में वायु प्रदूषण, जल का प्रदूषण, मिट्टी का प्रदूषण, तापीय प्रदूषण, विकरणीय प्रदूषण, औद्योगिक प्रदूषण, समुद्रीय प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण, नगरीय प्रदूषण, प्रदूषित नदियां और जलवायु बदलाव तथा ग्लोबल वार्मिंग के खतरे लगातार दस्तक दे रहे हैं। ऐसी हालत में इतिहास की चेतावनी ही पर्यावरण दिवस का सन्देश लगती है।

पिछले कुछ सालों में पर्यावरणीय चेतना बढ़ी है। विकल्पों पर गम्भीर चिन्तन हुआ है तथा कहा जाने लगा है कि पर्यावरण को बिना हानि पहुंचाए या न्यूनतम हानि पहुंचाए टिकाऊ विकास सम्भव है। यही बात प्राकृतिक संसाधनों के सन्दर्भ में कही जाने लगी है। कुछ लोग उदाहरण देकर बताते हैं कि लगभग 5000 साल तक खेती करने, युद्ध सामग्री निर्माण, धातु शोधन, नगर बसाने तथा जंगलों को काट कर बेवर खेती करने के बावजूद अर्थात विकास और प्राकृतिक संसाधनों के बीच तालमेल बिठाकर उपयोग करने के कारण प्राकृतिक संसाधनों को ह्रास नहीं हुआ था । तो कुछ लोगों का कहना है कि परिस्थितियां तथा आवश्यकताओं के बदलने के कारण भारतीय उदाहरण बहुत अधिक प्रासंगिक नहीं है ।

फासिल ऊर्जा के विकल्प के तौर स्वच्छ ऊर्जा जैसे अनेक उदाहरण अच्छे भविष्य की उम्मीद जगाते हैं। सम्भवतः इसी कारण विश्वव्यापी चिन्ता इतिहास से सबक लेती प्रतीत होती है।

पर्यावरण को हानि पहुंचाने में औद्योगीकरण तथा जीवनशैली को जिम्मेदार माना जाता है। यह पूरी तरह सच नहीं है। हकीक़त में समाज तथा व्यवस्था की अनदेखी और पर्यावरण के प्रति असम्मान की भावना ने ही संसाधनों तथा पर्यावरण को सर्वाधिक हानि पहुंचाई है। उसके पीछे पर्यावरण लागत तथा सामाजिक पक्ष की चेतना के अभाव की भी भूमिका है। इन पक्षों को ध्यान में रख किया विकास ही अन्ततोगत्वा विश्व पर्यावरण दिवस का अमृत होगा।

डायनासोर यदि आकस्मिक आसमानी आफत के शिकार हुए थे तो हम अपने ही द्वारा पैदा की आफ़त की अनदेखी के शिकार हो सकते है । विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर यह अपेक्षा करना सही होगा कि रेत में सिर छुपाने के स्थान पर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये स्वच्छ तकनीकों को आगे लाया जाना चाहिए, गलत तकनीकों को नकारा जाना चाहिए या सुधार कर सुरक्षित बनाया जाना चाहिए। उम्मीद है, कम–से–कम भारत में ज़मीनी हकीक़त का अर्थशास्त्र उसकी नींव रखेगा। शायद यही इतिहास का भारतीय सबक होगा।

भारत पर असर

एक अन्य अध्ययन के मुताबिक, विकास के नए पैमानों को अपनाने की भारतीय ललक यदि यहीं रही, तो वर्ष 2050 तक शीतकाल में तापमान 3 से 4 डिग्री तक बढ़ सकता है। मानसूनी वर्षा में 10 से 29 प्रतिशत कमी आ सकती है। हिमालयी ग्लेशियरों के 30 मीटर प्रतिवर्ष की रफ्तार से घटने का अनुमान लगाया गया है। इससे समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा।

कई द्वीप जलमग्न होंगे। बदली जलवायु, बाढ़, चक्रवात और सूखा लाएगी। जहां जोरदार बारिश होगी, वहीं कुछ समय बाद सूखे का चित्र हम देखेंगे। 100 वर्ष में आने वाली बाढ़, दस वर्ष में आएगी। हो सकता है कि औसत वही रहे, किन्तु वर्षा का दिवसीय वितरण बदल जाएगा। नदियों के रूख बदलेंगे। कई सूखेंगी, तो कई उफन जाएंगी।

गंगा–ब्रह्मपुत्र के निचले किनारे पर शहर बनाने की जिद की, तो वे डुबेंगे ही। बांध नियंत्रण के लिये नदी तटबंध तोड़ने पड़ेंगे। निचले स्थान पर बने मकान डुबेंगे। लोगों को ऊंचे स्थानों पर जाना होगा। पानी के कारण संकट, निश्चित तौर पर बढ़ेगा, साथ ही पानी का बाजार भी।

जलवायु परिवर्तन का वनस्पति पर एक असर यह होगा कि फूल ऐसे समय खिलेंगे, जब नहीं खिलने चाहिए। फसलें तय समय से पहले या बाद में पकने से हम आश्चर्य में न पड़ें। यूनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा के प्रमुख शोधकर्ता डॉ. ग्लेन मॉरिस के अनुसार, तापमान बढ़ने से गैम्बीयर्डिक्स नामक विषैला समुद्री शैवाल बढ़ रहा है।

मछलियां, समुद्र में शैवाल खाकर ही जिन्दा रहती हैं। शैवालों की बढ़ती संख्या के कारण, वे इन्हें खाने को मजबूर हैं। यह ज़हर इतना ख़तरनाक किस्म का है कि पकाने पर भी इनका ज़हर खत्म नहीं होता। इन मछलियों को खाने वाले लोग गम्भीर रोग की चपेट में आये हैं ।

आंकलन है कि यदि तापमान एक से चार डिग्री सेल्सियस तक नीचे गया, तो दुनिया में खाद्य उत्पादन 24 से 30 प्रतिशत गिर जाएगा। मौसम की मार का असर, फसल उत्पादन के साथ–साथ पौष्टिकता पर भी असर पड़ेगा। भारत, पहले ही दुनिया में सबसे अधिक कुपोषितों की संख्या वाला देश है; आगे क्या होगा ?

गौर कीजिए कि वर्ष 2010 के वैश्विक जलवायु संकट सूचकांक में भारत पहले दस देशों में है। तापमान बढ़ने से मिट्टी की नमी, कार्यक्षमता प्रभावित होगी। लवणता बढ़ेगी। जैव विविधता घटेगी। बाढ़ से मृदा क्षरण बढ़ेगा, सूखे से बंजरपन आएगा। गर्मी कीट प्रजनन क्षमता में सहायक होती है। अतः कीट व रोग बढ़ेगा।

उत्पादन घटेगा

विशेषज्ञों के मुताबिक, इन सभी का असर यह होगा कि भारत में चावल उत्पादन के 2020 तक 6 से 7 प्रतिशत, गेहूं में 5 से 6 प्रतिशत आलू में तीन तथा सोयाबीन में 3 से 4 प्रतिशत कमी आएगी। तापमान में 10 सेल्सियस की वृद्धि हुई तो गेहूं का उत्पादन 70 लाख टन गिर जाएगा। अंगूर जैसे विलासी फल गायब हो जाएंगे। दूसरी ओर, जनसंख्या बढ़ने से सामग्री की मांग बढ़ेगी। भारतीय राष्ट्रीय आय में कृषि का हिस्सा पिछले तीन साल में डेढ़ फीसदी घटा है ।

वर्ष 2009 में सूखे की वजह से 29 हजार करोड़ का खाद्यान्न कम हुआ। खेती में गिरावट का असर सीधे 64 प्रतिशत कृषक आबादी पर तो पड़ेगा ही। खाद्य वस्तुएं महंगी होने से गैर कृषक आबादी पर भी असर पड़ेगा और राजनीति पर भी। पिछले महीने, दाल के उत्पादन में कमी के कारण हो–हल्ला हुआ।

खाद्यान में पांच फीसदी की कमी आएगी, तो जीडीपी एक फीसदी नीचे उतर जाएगी। भारत में 2100 तक प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में 23 प्रतिशत तक की कमी का अनुमान है।

पर्यावरण प्रदूषण : नियंत्रण एवं उपाय

बढ़ता प्रदूषण वर्तमान समय की एक सबसे बड़ी समस्या है, जो आधुनिक और तकनीकी रूप से उन्नत समाज में तेजी से बढ़ रहा है । इस समस्या से समस्त विश्व अवगत तथा चिंतित है । प्रदूषण के कारण मनुष्य जिस वातावरण या पर्यावरण में रहा है, वह दिन–ब–दिन खराब होता जा रहा है ।

कहीं अत्यधिक गर्मी सहन करनी पड़ रही है तो कहीं अत्यधिक ठंड । इतना ही नहीं, समस्त जीवधारियों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों का भी सामना करना पड़ रहा है । प्रकृति और उसका पर्यावरण अपने स्वभाव से शुद्ध, निर्मल और समस्त जीवधारियों के लिए स्वास्थ्य–वर्द्धक होता है, परंतु किसी कारणवश यदि वह प्रदूषित हो जाता है तो पर्यावरण में मौजूद समस्त जीवधारियों के लिए वह विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न करता है ।

ज्यों–ज्यों मानव सभ्यता का विकास हो रहा है, त्यों–त्यों पर्यावरण में प्रदूषण की मात्रा बढ़ती ही जा रही है । इसे बढ़ाने में मनुष्य के क्रियाकलाप और उनकी जीवनशैली काफी हद तक जिम्मेवार है । सभ्यता के विकास के साथ–साथ मनुष्य ने कई नए आविष्कार किए हैं जिससे औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी है ।

जनसंख्या वृद्धि के कारण मनुष्य दिन–प्रतिदिन वनों की कटाई करते हुए खेती और घर के लिए जमीन पर कब्जा कर रहा है । खाद्य पदार्थों की आपूर्ति के लिए रायायनिक खादों का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे न केवल भूमि बल्कि, जल भी प्रदूषित हो रहा है । यातायात के विभिन्न नवीन साधनों के प्रयोग के कारण ध्वनि एवं वायु प्रदूषित हो रहे हैं ।

गौर किया जाए तो प्रदूषण वृद्धि का मुख्य कारण मानव की अवांछित गतिविधियां हैं, जो प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करते हुए इस पृथ्वी को कूड़े–कचरे का ढेर बना रही है । कूड़ा–कचरा इधर–उधर फेंकने से जल, वायु और भूमि प्रदूषित हो रहे, जो संपूर्ण प्राणी–जगत के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं ।

पर्यावरण प्रदूषण चार प्रकार का होता है :
जल प्रदूषण
वायु प्रदूषण
भूमि प्रदूषण और
ध्वनि प्रदूषण

जल प्रदूषण

जल समस्त प्राणियों के जीवन का आधार है । आधुनिक मानव सभ्यता के विकास के साथ जल प्रदूषण की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है । औद्योगीकरण के कारण शहरीकरण की प्रवृत्ति दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है । जो पहले गांव हुआ करते थे, वे अब विभिन्न उद्योगों की स्थापना के बाद शहरों में तब्दील हो रहे हैं ।

शहरों में अत्यधिक आबादी होने के कारण फ्लैट निर्माण की प्रवृत्ति बढ़ रही है, ताकि एक फ्लैट में तीन से छह परिवार आसानी से रह सकें । इन फ्लैटों में कम स्थान पर पानी की आवश्यकता अधिक होती है और वहां के भूमिगत जल भंडार पर दबाव बढ़ रहा है । डीप बोरिंग निर्माण करते हुए वहां के भूमिगत जल का दोहन किया जा रहा है ।

उद्योगों के अत्यधिक निर्माण से उनसे निकलने वाले दूषित जल, बचे हुए, रसायन कचरा आदि को नालियों के रास्ते नदी में बहा दिया जाता है । फ्लैट में रहने वाले लोगों के दैनिक क्रियाकलापों से उत्पन्न कचरे को नदी किनारे फेंका जाता है, जिससे नदियों का जल प्रदूषित होता है ।

शहर के समीप रहने वाली बस्तियों में उचित शौचालय की व्यवस्था नहीं होती, या होती भी है तो यह सुचारू रूप से कार्य नहीं कर पाती है, जिससे वहां लोग प्रायः नदी या तालाब किनारे की जमीन या नालियों का प्रयोग शौच के लिए करते हैं । बारिश में यह सारी गंदगी नदियों या तालाबों में जा मिलती है ।

बस्तियों में कचरे की निकासी की उचित व्यवस्था न होने पर प्रायः लोग कचरे को तालाब या नदी के पानी में डाल देते हैं । तालाबों एवं नदियों के पानी का इस्तेमाल नहाने एवं कपड़े धोने के अलावा पशुओं को नहलाने के लिए भी किया जाता है, जिससे उनके शरीर की गंदगी पानी में घुल जाती है । कपड़े धोए जाते हैं, कचरा, मल–मूत्र डाला जाता है, पुराने कपड़े शवों की राख, सड़े–गले पदार्थ डाले जाते हैं, इतना ही नहीं कभी–कभी शवों को नदियों में बहा दिया जाता है ।

नदियों, तालाबों के जल एवं भूमिगत जल को तो मनुष्यों ने प्रदूषित किया ही है । प्रदूषित करने में इसने सागर के जल को भी नहीं छोड़ा । सागर किनारे कई स्थलों पर पर्यटकों का आना–जाना लगा रहता है, जिससे सागर किनारे कई छोटी–बड़ी बस्तियां बस गई हैं । वहां के लोगों का जीवनयापन पर्यटकों को विभिन्न प्रकार की सामग्रियां बेचकर होता है ।

उन बस्तियों में किसी प्रकार के शौचालय की व्यवस्था नहीं है, अगर है भी तो वे सुचारू रूप से कार्यरत नही है, जिसके कारण बस्ती के लोग सागर के पानी में ही शौच करते हैं तथा घर के कूड़े–कचरे को भी सागर के जल में बहा देते हैं, जिससे सागर का जल प्रदूषित होता है । विभिन्न तकनीकों के विकास के कारण सागर के जल में बड़े–बड़े जहाज चलते हैं, जो यात्रियों के आवागमन एवं सामग्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने का काम करते हैं ।

जहाज अपनी साफ–सफाई के पश्चात् गंदगी को प्रायः समुद्र के पानी में डाल देते हैं । कभी–कभी किसी दुर्घटनावश जहाज डूब जाता है तो उसमें मौजूद रासायनिक पदार्थ, तेल आदि समुद्र के पानी में मिल जाते हैं और लंबे समय तक उसमें रहने वाले जीव–जंतुओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते रहते हैं ।

जल दूषित हो जाने के कारण कुछ जीव तत्काल मर जाते हैं और जल को और अधिक प्रदूषित कर देते हैं । दूषित जल में रहने वाले जलीय जीवों का सेवन करने से मनुष्य भी बीमार पड़ते हैं । विकसित देश प्रायः अपने देश की गंदगी व ई–कचरा को समुद्र में डाल देते हैं, जिससे जल बुरी तरह से दूषित होता है ।

प्रारंभ में जब तकनीक का विकास नहीं हुआ था, तब लोग प्रकृति व पर्यावरण से सामंजस्य बैठकर जीवनयापन करते थे, परंतु तकनीकी विकास एवं औद्योगीकरण के कारण आधुनिक मनुष्य में आगे बढ़ने की होड़ उत्पन्न हो गई । इस होड़ में मनुष्य को केवल अपना स्वार्थ दिखाई पड़ रहा है ।

वह यह भूल गया है कि इस पृथ्वी पर उसका वजूद प्रकृति एवं पर्यावरण के कारण ही है । यह भी पर्यावरण प्रदूषण का एक मुख्य कारण है । प्राकृतिक रूप से जल में जीवों के मरने व जीव–जंतुओं के नहाने से ही जल प्रदूषित हो सकता है, परंतु मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए न केवल जल का प्रयोग नहाने व पीने के लिए करता है, बल्कि उसमें घर का कचरा, उद्योगों का कचरा भी डालता है ।

किसान खेतों में विभिन्न प्रकार के रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं, ताकि उनकी फसल अच्छी हो, फसल में कीड़े न लगें, इसलिए कीटनाशकों का भी छिड़काव किया जाता है । वर्षा के पानी के साथ ये सभी रासायनिक तत्व तालाब और नदी–नालों में चले जाते हैं और वहां के जल को प्रदूषित करते हैं ।

उद्योग अपनी गंदगी को सीधे तौर पर नदियों–नालों में डालते हैं, साथ ही उनके धुएं की निकासी सही तरीके से नहीं की जाती है, जिससे धुएं का तैलीय अंश आस–पास के संचित जल भंडार के ऊपर एक काली परत के रूप में जमा रहता है और जल को प्रदूषित करता है ।

वायु प्रदूषण

मनुष्य ने न केवल जल को प्रदूषित किया है, बल्कि अपने विभिन्न क्रियाकलापों एवं तकनीकी वस्तुओं के प्रयोग द्वारा वायु को भी प्रदूषित किया है । वायुमंडल में सभी प्रकार की गैसों की मात्रा निश्चित है । प्रकृति में संतुलन रहने पर इन गैसों की मात्रा में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आता, परंतु किसी कारणवश यदि गैसों की मात्रा में परिवर्तन हो जाता है तो वायु प्रदूषण होता है ।

अन्य प्रदूषणों की तुलना में वायु प्रदूषण का प्रभाव तत्काल दिखाई पड़ता है । वायु में यदि जहरीली गैस घुली हो तो वह तुरंत ही अपना प्रभाव दिखाती है और आस–पास के जीव–जंतुओं एवं मनुष्यों की जान ले लेती है । भोपाल गैस कांड इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है । विभिन्न तकनीकों के विकास से यातायात के विभिन्न साधनों का भी विकास हुआ है ।

एक ओर जहां यातायात के नवीन साधन आवागमन को सरल एवं सुगम बनाते हैं, वहीं दूसरी ओर ये पर्यावरण को प्रदूषित करने में अहम् भूमिका निभाते हैं । नगरों में प्रयोग किए जाने वाले यातायात के साधनों में पेट्रोल और डीजल ईंधन के रूप में प्रयोग किए जाते हैं । पेट्रोल और डीजल के जलने से उत्पन्न धुआं वातावरण को प्रदूषित करता है ।

औद्योगिकरण के युग में उद्योगों की भरमार है । विभिन्न छोटे–बड़े उद्योगों की चिमनियों से निकलने वाले धुएं के कारण वायुमंडल में सल्फर डाइ–ऑक्साइड और हाइड्रोजन सल्फाइड गैस मिल जाते हैं । ये गैस वर्षा के जल के साथ पृथ्वी पर पहुंचते हैं और गंधक का अम्ल बनाते हैं, जो पर्यावरण व उसके जीवधारियों के लिए हानिकारक होता है ।

चमड़ा और साबुन बनाने वाले उद्योगों से निकलने वाली दुर्गंध–युक्त गैस पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं । सीमेंट, चूना, खनिज आदि उद्योगों में अत्यधिक मात्रा में धूल उड़ती है और वायु में मिल जाती है, जिससे वायु प्रदूषित होती है । धूल मिश्रित वायु में सांस लेने से प्रायः वहां काम करने एवं रहने वालों को रक्तचाप हृदय रोग, श्वास रोग, आंखों के रोग और टी.बी. जैसे रोग होने की संभावना बढ़ जाती है ।

जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि होने से मनुष्य के रहने का स्थान दिन–ब–दिन छोटा पड़ता जा रहा है, इसलिए मनुष्य वनों की कटाई का अपने रहने के लिए आवास का निर्माण कर रहा है । शहरों में एलपीजी तथा किरोसीन का प्रयोग खाना बनाने के लिए किया जाता है, जो एक प्रकार की दुर्गंध वायु में फैलाते हैं ।

कुछ लोग जलावन के लिए लकड़ी या कोयले का इस्तेमाल करते हैं, जिससे अत्यधिक धुआं निकलता है और वायु में मिल जाता है । स्थान एवं जलावन के लिए मनुष्य वनों की कटाई करते हैं । वनों की कटाई से वायुमंडल में ऑक्सीजन की मात्रा घट रही है और कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है और वायु प्रदूषित हो रही है । मनुष्य द्वारा विभिन्न प्रकार के तकनीकी उपकरणों का सहारा लेकर विस्फोट, गोलाबारी, युद्ध आदि किए जाते हैं ।

विस्फोट होने से अत्यधिक मात्रा में धूलकण वायुमंडल में मिल जाते हैं और वायु को प्रदूषित करते हैं । बंदूक का प्रयोग एवं अत्यधिक गोलीबारी से बारूद की दुर्गंध वायुमंडल में फैलती है । संप्रति मनुष्य अपने आराम के लिए प्लास्टिक की वस्तुओं का इस्तेमाल करते हैं और टूटने या फटने की स्थिति में उन्हें इधर–उधर फेंक देता है । सफाई कर्मचारी प्रायः सभी प्रकार के कचरे के साथ प्लास्टिक को भी जला देते हैं, जिससे वायुमंडल में दुर्गंध फैलती है ।

तकनीक संबंधी नवीन प्रयोग करने के क्रम में कई प्रकार के विस्फोट किए जाते हैं तथा गैसों का परीक्षण किया जाता है । इस दरम्यान कई प्रकार की गैस वायुमंडल में घुलकर उसे प्रदूषित करती है । हानिकारक गैसों के अत्यधिक उत्सर्जन के कारण 'एसिड रेन' होती है, जो मानव के साथ–साथ अन्य जीवित प्राणियों तथा कृषि–संबंधी कार्यों के लिए घातक होती है ।

दफ्तर एवं घरेलू उपयोग में लाए जाने वाले फ्रिज और एयरकंडीशनरों के कारण क्लोरो–फ्लोरो कार्बन का निर्माण होता है, जो सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों से हमारी त्वचा की रक्षा करने वाली ओजोन परत को क्षति पहुंचाती है । विभिन्न उत्सवों के अवसर पर अत्यधिक पटाखेबाजी से भी वायु प्रदूषित होती है ।

भूमि समस्त जीवों को रहने का आधार प्रदान करती है । यह भी प्रदूषण से अछूती नहीं है । जनसंख्या वृद्धि के कारण मनुष्य के रहने का स्थान कम पड़ता जा रहा है, जिससे वह वनों की कटाई करते हुए अपनी जरूरत को पूरा कर रहा है । वनों की निरंतर कटाई से न केवल वायुमंडल में कार्बन डाइ–ऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है और ऑक्सीजन की मात्रा घट रही है, बल्कि जमीन में रहने वाले जीव–जंतुओं का भी संतुलन बिगड़ रहा है ।

पेड़, भूमि की ऊपरी परत को वायु से उड़ने तथा पानी में बहने से बचाते हैं और भूमि उर्वर बनी रहती है । पेड़ों की

निरंतर कटाई से भूमि के बंजर बनने एवं रेगिस्तान बनने की संभावनाएं बढ़ रही हैं । इस प्रकार वनों की कटाई से प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है । प्रकृति के संतुलन में परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण है । जनसंख्या वृद्धि से अनाज की मांग भी बढ़ गई है ।

कृषक अत्यधिक फसल उत्पादन के लिए रासायनिक खादों का इस्तेमाल करते हैं एवं फसल को कीड़ों से बचाने के लिए कीटनाशकों का भी छिड़काव करते हैं, जिससे भूमि प्रदूषित होती है । भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है तथा कचरे का ढेर यहा–वहां बिखेरा जा रहा है । भूमिगत जल के अलावा भूमि में मौजूद खनिज पदार्थों का अत्यधिक दोहन करने से भूस्खलन की समस्या उत्पन्न होती है ।

कचरे के रूप में प्लास्टिक का क्षय नहीं होता । वह जिस स्थान पर अत्यधिक मात्रा में होता है, वहां के पेड़–पौधों में उचित वृद्धि नहीं हो पाती, जिससे भूमि दूषित होती है । तकनीकी युग में आधुनिक मानव ने कई नए हथियारों का आविष्कार कर लिया है, ताकि सरलतापूर्वक शत्रु का नाश किया जा सके । युद्ध में इन हथियारों का प्रयोग किए जाने से युद्धभूमि में अत्यधिक लोग मारे ही जाते हैं, साथ ही आस–पास के इलाकों में भी जीव–जंतु मारे जाते हैं, जिससे भूमि प्रदूषित होती है ।

ध्वनि प्रदूषण

मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभिक चरण में ध्वनि प्रदूषण गंभीर समस्या नहीं थी, परंतु मानव सभ्यता ज्यों–ज्यों विकसित होती गई और आधुनिक उपकरणों से लैस होती गई, त्यों–त्यों ध्वनि प्रदूषण की समस्या विकराल व गंभीर हो गई है । संप्रति यह प्रदूषण मानव जीवन को तनावपूर्ण बनाने में अहम् भूमिका निभाता है । तेज आवाज न केवल हमारी श्रवण शक्ति को प्रभावित करती है, बल्कि यह रक्तचाप, हृदय रोग, सिर दर्द, अनिद्रा एवं मानसिक रोगों का भी कारण है ।

औद्योगिक विकास की प्रक्रिया में देश के कोने–कोने में विविध प्रकार के उद्योगों की स्थापना हुई है । इन उद्योगों में चलने वाले विविध उपकरणों से उत्पन्न आवाज से ध्वनि प्रदूषित होती है । विभिन्न मार्गों चाहे वह जलमार्ग हो, वायु मार्ग हो या फिर भू–मार्ग, सभी तेज ध्वनि उत्पन्न करते हैं । वायुमार्ग में चलने वाले हवाई जहाज, रॉकेट एवं हेलीकॉप्टर की भीषण गर्जन ध्वनि प्रदूषण बढ़ाने में सहायक होती है ।

जलमार्ग में चलने वाले जहाजों का शोर एवं भू–मार्ग में चलने वाले वाहनों के इंजन की आवाज़ के साथ हॉर्न ध्वनि–प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं । मनोरंजन एवं जन–संचार के विभिन्न माध्यमों द्वारा तेज आवाज में ध्वनि प्रेषित की जाती है । लाउडस्पीकरों द्वारा सभा एवं जलसों में बोलकर सभा को संबोधित किया जाता है एवं सूचना प्रेषित की जाती है । विभिन्न उत्सवों के अवसर पर जोर–जोर से गाने बजाए जाते हैं ।

जन–संपर्क अभियान चलाने के लिए भी लाउडस्पीकर का प्रयोग किया जाता है और जनता तक सूचना प्रेषित की जाती है । विज्ञापन दाता भी कभी–कभी अपने उत्पादों का प्रचार तेज आवाज में करते हैं । डीप बोरिंग करवाने के क्रम में, क्रशूर मशीन चलाने, डोजर से खुदाई करवाने के क्रम में अत्यधिक शोर होता है । शादी, विवाह या धार्मिक अनुष्ठान के अवसर पर वाद्य यंत्रों का अत्यधिक शोर ध्वनि का प्रदूषित करता है । इसके अलावा यह अनावश्यक असुविधाजनक और अनुपयोगी ध्वनि प्रदूषण उत्पन्न करते हैं ।

पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण

पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण पाने के लिए सर्वप्रथम जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगानी होगी, ताकि आवास के लिए वनों की कटाई न हो । खाद्य पदार्थों के उत्पादन में वृद्धि हो, इसके लिए रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के स्थान पर जैविक खाद का इस्तेमाल करना होगा । कूड़े–कचरे को पुनः प्रयोग करना होगा, जिससे यह पृथ्वी कूड़े–कचरे का ढेर बनने से बच जाएगी ।

कारखानों से निकलने वाले गंदे पानी को सीधे नदी–ताले में न डालकर, उनकी सफाई करते हुए नदियों में बहाना होगा । यातायात के विभिन्न साधनों का प्रयोग जागरूकता के साथ करना होगा । अनावश्यक रूप से हॉर्न का प्रयोग नहीं करना चाहिए, जब जरूरत न हो तब इंजन को बंद करना एवं नियमित रूप से गाड़ी के साइलेंसर की जांच करवानी होगी, ताकि धुएं के अत्यधिक प्रसार को नियंत्रित किया जा सके ।

उद्योगपतियों को अपने स्वार्थ को छोड़ उद्योगों की चिमनियों को ऊंचा करना होगा तथा उद्योगों को प्रदूषण नियंत्रण के नियमों का पालन करना होगा । हिंसक क्रियाकलापों पर रोक लगानी होगी । सबसे जरूरी बात यह कि लोगों को पर्यावरण संबंधी संपूर्ण जानकारी प्रदान करते हुए जागरूक बनाना होगा, तभी प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जा सकता है ।

आम लोगों को जागरूक बनाने के लिए उन्हें पर्यावरण के लाभ और उसके प्रदूषित होने पर उससे होने वाली समस्याओं की विस्तृत जानकारी देनी होगी । लोगों को जागरूक करने के लिए उनके मनोरंजन के माध्यमों द्वारा उन्हें आकर्षक रूप में जागरूक करना होगा । यह काम समस्त पृथ्वीवासियों को मिलकर करना होगा, ताकि हम अपने उस पर्यावरण को और प्रदूषित होने से बचा सके, जो हमें जीने का आधार प्रदान करता है । अत्यधिक शोर उत्पन्न करने वाले वाहनों पर रोक लगानी होगी ।

प्रदूषण चाहे किसी भी प्रकार का क्यों न हो, हर हाल में मानव एवं समस्त जीवधारियों के अलावा जड़–पदार्थों को भी नुकसान पहुंचाता है ।

पर्यावरण प्रदूषण रोकने के उपाय

पर्यावरण की सुरक्षा से ही प्रदूषण की समस्या को सुलझाया जा सकता है । पर्यावरण शब्द दो शब्दों के मेल से बना है–परि और आवरण । 'परि' शब्द का अर्थ है बाहरी तथा आवरण का अर्थ है कवच अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है बाहरी कवच, जो नुकसानदायक तत्वों से वातावरण की रक्षा करता है । यदि हम अपने पर्यावरण को ही असुरक्षित कर दें तो हमारी रक्षा कौन करेगा ?

इस समस्या पर यदि हम आज मंथन नहीं करेंगे तो प्रकृति संतुलन स्थापित करने के लिए स्वयं कोई भयंकर कदम उठाएगी और हम मनुष्यों को प्रदूषण का भयंकर परिणाम भुगतना होगा । प्रदूषण से बचने के लिए हमें अत्यधिक पेड़ लगाने होंगे । प्रकृति में मौजूद प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करने से बचना होगा । हमें प्लास्टिक की चीजों के इस्तेमाल से परहेज करना होगा । कूड़े–कचरे को इधर–उधर नहीं फेंकना होगा । वर्षा के जल का संचय करते हुए भूमिगत जल को संरक्षित करने का प्रयास करना होगा । पेट्रोल, डीजल, बिजली के अलावा हमें ऊर्जा के अन्य स्रोतों से भी ऊर्जा के विकल्प ढूंढ़ने होंगे । सौर ऊर्जा व पवन ऊर्जा के प्रयोग पर बल देना होगा । अनावश्यक एवं अनुपयोगी ध्वनियों पर रोक लगानी होगी । तकनीक के क्षेत्र में नित्य नए–नए प्रयोग व परीक्षण हो रहे हैं ।

हमें ऐसी तकनीक का विकास करना होगा, जिससे यातायात के साधनों द्वारा प्रदूषण न फैले । सबसे अहम बात यह है कि हम मनुष्यों को अपनी पृथ्वी को बचाने के लिए सकारात्मक सोच रखनी होगी तथा निःस्वार्थ होकर पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए कार्य करना होगा । हमें मन में यह ध्येय रखकर कार्य करना होगा कि हम स्वयं अपने आपको, अपने परिवार को, देश को और इस पृथ्वी को सुरक्षित कर रहे हैं ।

संकलन कर्ता : संगीता श्रीवास्तव
साभार www.hindi.indiawaterprtal.org

चप्पल

—कमलेश्वर, हिंदी उपन्यासकार

कहानी बहुत छोटी सी है । मुझे ऑल इण्डिया मेडिकल इंस्टीटयूट की सातवीं मंजिल पर जाना था। आई०सी०यू० में गाड़ी पार्क करके चला तो मन बहुत ही दार्शनिक हो उठा था। कितना दुरूख और कष्ट है इस दुनिया में...लगातार एक लड़ाई मृत्यु से चल रही है...और उसके दुरूख और कष्ट को सहते हुए लोग —— सब एक से हैं। दर्द और यातना तो दर्द और यातना ही है —— इसमें इंसान और इंसान के बीच भेद नहीं किया जा सकता। दुनिया में हर माँ के दूध का रंग एक है। खून और आंसुओं का रंग भी एक है। दूध, खून और आँसुओं का रंग नहीं बदला जा सकता...शायद उसी तरह दुरूख, कष्ट और यातना के रंगों का भी बँटवारा नहीं किया जा सकता। इस विराट मानवीय दर्शन से मुझे राहत मिली थी.... मेरे भीतर से सदियाँ बोलने लगी थीं। एक पुरानी सभ्यता का वारिस होने के नाते यह मानसिक सुविधा जरूर है कि तुम हर बात, घटना या दुर्घटना का कोई दार्शनिक उत्तर खोज सकते हो। समाधान चाहे न मिले, पर एक अमूर्त दार्शनिक उत्तर जरूर मिल जाता है।

और फिर पुरानी सभ्यताओं की यह खूबी भी है कि उनकी परम्परा से चली आती संतानों को एक आत्मा नाम की अमूर्त शक्ति भी मिल गई है —— और सदियों पुरानी सभ्यता मनुष्य के क्षुद्र विकारों का शमन करती रहती है...एक दार्शनिक दृष्टि से जीवन की क्षण—भंगुरता का एहसास कराते हुए सारी विषमताओं को समतल करती रहती है...

मुझे अपने उस मित्र की बातें याद आईं जिसने मुझे संध्या के संगीन ऑपरेशन की बात बताई थी और उसे देख आने की सलाह दी थी। उसी ने मुझे आई०सी०यू० में संध्या के केबिन का पता बताया था —— आठवें फ्लोर पर ऑपरेशन थिएटर्स हैं और सातवें पर संध्या का आ०सी०यू०। मेजर ऑपेरशन में संध्या की बड़ी आँत काटकर निकाल दी गई थी और अगले अड़तालीस घण्टे क्रिटिकल थे...

रास्ता इमरजेंसी वार्ड से जाता था। एक बेहद दर्द भरी चीख इमरजेंसी वार्ड से आ रही थी... वह दर्द—भरी चीख तो दर्द—भरी चीख ही थी— कोई घायल मरीज असह्य तकलीफ से चीख रहा था। उस चीख से आत्मा दहल रही थी... दर्द की चीख और दर्द की चीख में क्या अन्तर था! दूध, खून और आँसुओं के रंगों की तरह चीख की तकलीफ भी तो एक—सी थी। उसमें विषमता कहाँ थी?...

मेरा वह मित्र जिसने मुझे संध्या को देख आने की फर्ज अदायगी के लिए भेजा था, वह भी इलाहाबाद का ही था। वह भी उसी सदियों पुरानी सभ्यता का वारिस था। ठेठ इलाहाबादी मौज में वह भी दार्शनिक की तरह बोला था—— अपना क्या है ? रिटायर हाने के बाद गंगा किनारे एक झोपड़ी डाल लेंगे। आठ—दस ताड़ के पेड़ लगा लेंगे... मछली मारने की एक बंसी...दो चार मछलियाँ तो दोपहर तक हाथ आएँगी ही... रात भर जो ताड़ी टपकेगी उसे फ्रिज में रख लेंगे...

फ्रिज में ?

और क्या... माडर्न साधू की तरह रहेंगे, मछलियां तलेंगे, खाएँगे और ताड़ी पीएँगे...और क्या चाहिए... पेंशन मिलती रहेगी। और माया—मोह क्यों पालें? पालेंगे तो प्राण अटके रहेंगे... ताड़ी और मछली... बस, आत्मा ताड़ी पीकर, मछली खाके आराम से महाप्रस्थान करे... न कोई दुरूख, न कोई कष्ट... लेकिन तुम जाके संध्या को देख जरूर आना...वो क्रिटिकल है...

मेरा मित्र अपने भविष्य के बारे में कितना निश्चिन्त था, यह देखकर मुझे अच्छा लगा था।

यह बात सोच—सोचकर मुझे अभी तक अच्छा लग रहा था, सिवा उस चीख के, जो इमरजेंसी वार्ड से अब तक आ रही थी...और मुझे सता रही थी...इसीलिए लिफ्ट के आने में जो देरी लग रही थी वह मुझे खल रही थी।

आखिर लिफ्ट आयी। सेवन—सात, मैंने कहा और संध्या के बारे में सोचने लगा। दो—तीन वार्ड बॉय तीसरी और चौथी मंजिल पर उतर गए।

पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट रुकी तो कुछ लोग ऊपर जाने के लिए इन्तजार कर रहे थे। इन्हीं लोगों में था वह पाँच साल का बच्चा—— अस्पताल की धारीदार बहुत बड़ी—सी कमीज पहने हुए...शायद उसका बाप, वह जरूर ही उसका बाप होगा, उसे गोद में उठाए हुए था... उस बच्चे के पैरों

में छोटी–छोटी नीली हवाई चप्पलें थी, जो गोद में होने के कारण उसके छोटे–छोटे पैरों में उलझी हुई थीं।

अपने पैरों से गिरती हुई चप्पलों को धीरे से उलझाते हुए बच्चा बोला, ''बाबा! चप्पल...।''

उसके बाप ने चप्पलें उसके पैरों में ठीक कर दीं। वार्ड बॉय व्हील–चेयर बढ़ाते हुए बोला–– आ जा, इसमें बैठेगा! बच्चा हल्के से हँसा। वार्ड बॉय ने उसे कुर्सी में बैठा दिया... उसे बैठने में कुछ तकलीफ हुई पर वह कुर्सी के हत्थे पर अपने नन्हें–नन्हें हाथ पटकता हुआ भी हँसता रहा। दर्द का अहसास तो उसे भी था पर दर्द के कारण का अहसास उसे बिल्कुल नहीं था। वह कुर्सी में ऐसे बैठा था जैसे सिंहासन पर बैठा हो... कुर्सी बड़ी थी और वह छोटा। वार्ड बॉय ने कुर्सी को पुश किया। वह लिफ्ट में आ गया। उसके साथ ही उसका बाप भी। उसका बाप उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरता रहा।

लिफ्ट सात पर रुकी, पर मैं नहीं निकला। दो–एक लोग निकल गए। लिफ्ट आठ पर रुकी। यहीं ऑपरेशन थिएटर थे। दरवाजा खुला तो एक नर्स जिसके हाथ में सब पर्चे थे, उसे देखते हुए बोली–– ''आ गया तू!''

उस बच्चे ने धीरे से मुस्कराते हुए नर्स से जैसे कहा––हाँ। उसकी आँखें नर्स से शर्मा रही थीं और उनमें बचपन की बड़ी मासूम दूधिया चमक थी। व्हील–चेयर एक झटके के साथ लिफ्ट से बाहर आ गई । नर्स ने उसका कंधा हल्के से थपका...।

बाबा चप्पल... वह तभी बोला, 'मेरी चप्पल'...

उसकी एक चप्पल लिफ्ट के पास गिर गई थी उसके बाप ने वह चप्पल भी उसे पहना दी। उसने दोनों पैरों की उँगलियों को सिकोड़ा और अपनी चप्पलें पैरों में कस लीं।

लिफ्ट बंद हुई और नीचे उतर गई...।

वार्ड बॉय बच्चे की कुर्सी को पुश करता हुआ ऑपरेशन थिएटर वाले बरामदे में मुड़ गया। नर्स उसके साथ ही चली गई। उसका बाप धीरे–धीरे उन्हीं के पीछे चला गया ।

तब मुझे याद आया कि मुझे तो सातवीं मंजिल पर जाना था। संध्या वहीं थी। मैं सीढ़ियों से एक मंजिल उतर आया। संध्या के डॉक्टर पति ने मुझे पहचाना और आगे बढ़कर मुझसे हाथ मिलाया। हाथ की पकड़ में मायूसी और लाचारी थी। कुछ पल खामोशी रही। फिर मैंने कहा –– मैं कल ही वापस आया तभी पता चला। यह एकाएक कैसे हो गया?

नहीं, एकाएक नहीं, ब्लीडिंग तो पहले भी हुई थी, पर तब कंट्रोल कर ली गई थी। पंद्रह दिनों बाद फिर होने लगी। एक्सेसिव ब्लीडिंग। ...चार घण्टे ऑपरेशन में लगे...एण्ड यू नो, वी डॉक्टर्स आर वर्स्ट पेशेंट्स ! वो संध्या के बारे में भी कह रहे थे। संध्या भी डॉक्टर थी।

यस ! आप तो सब समझ रहे होंगे। ''संध्या को भी एक–एक बात का अंदाज हो रहा होगा।'' मैंने कहा। लेकिन वो बहुत करेजसली बिहेव कर रही है। संध्या के डॉक्टर पति ने कहा –– बोल तो सकती नहीं...पल्स भी गर्दन के पास मिली... आर्टीफिशियल रेस्पटेशन पर है...एक तरह से देखिए तो उसका सारा शरीर आराम कर रहा है और सब कुछ आर्टीफिशिल मदद से ही चल रहा है। संध्या के डाक्टर पति ज्यादातर बातें मुझे मेडिकल टर्म्स में ही बताते रहे और मैं उन्हें समझने की कोशिश करता रहा। बीच –बीच मैं इधर–उधर की बातें भी करता रहा।

''संध्या का भाई भी आज सुबह पहुँच गया... किसी तरह उसे जापान होते हुए टिकट मिल गया।'' उन्होंने बताया ।

''यह बहुत अच्छा हुआ।'' मैंने कहा।

''आप देखना चाहेंगे?''

''हाँ, अगर पॉसिबिल हो तो...।''

''आइए, देख तो सकते हैं... भीतर जाने की इजाजत नहीं है... वैसे तो सब डॉक्टर फ्रेंड्स ही हैं, पर...।''

''नहीं–नहीं, वो ठीक भी है...।''

''वो बोल भी नहीं सकती... वैसे आज कांशस है... कुछ कहना होता है तो लिख के बता देती है।'' उन्होंने कहा और एक केबिन के सामने पहुँचकर इशारा किया।

मैंने शीशे की दीवार से संध्या को देखा। वह पहचान में ही नहीं आई। दो डॉक्टर और नर्स उसे अटैण्ड भी कर रहे थे... और फिर इतनी नलियाँ और मशीनें थीं कि उनके बीच संध्या को पहचानना मुश्किल भी था।

संध्या होश में थी। डॉक्टर को देख रही थी। डॉक्टर उसका

एक हाथ सहलाते हुए उसे कुछ बता रहा था। मैंने संध्या को इस हाल में देखा तो मन उदास हो गया। वह कितनी लाचार थी। बीमारी और समय के सामने आदमी लाचार होता है...कुछ कर नहीं पाता। मैंने मन ही मन संध्या के लिए प्रार्थना की, किससे की यह नहीं मालूम – ऐसी जगहों पर आकर भगवान पर ध्यान जाता भी है और किसी के शुभ के लिए उसके अस्तित्व को स्वीकार कर लेने में अपना कुछ नहीं जाता –– सिवा प्रार्थना के कुछ शब्दों के।

हम आई०सी०यू० से हटकर फिर बरामदे में आ गए। वहाँ बैठने के लिए कोई जगह नहीं थी। बरामदे बैठने के लिए बनाए भी नहीं गए थे। संध्या की बहन नीचे चादर बिछाए बैठी थी। डॉक्टर के कुछ दोस्त एक गुच्छे में खड़े थे।

अभी तो, बाद में, एक ऑपरेशन और होगा। संध्या के डॉक्टर पति ने बताया –– तब छोटी आँत को सिस्टम से जोड़ा जाएगा। खैर, पहले वो स्टेबलाइज करे, फिर रिकवरी का सवाल है...इसमें ही करीब तीन महीने लग जाएँगे...उसके बाद मैं सोचता हूँ –– उसे अमेरिका ले जाऊँगा ।

''यह ठीक रहेगा।''

इसके बाद हम फिर इधर–उधर की बातें करते रहे। मैं संध्या की संगीन हालत से उनका ध्यान भी हटाना चाहता था। इसके सिवा मैं और कर भी क्या सकता था। और डॉक्टर के सामने यों खामोश खड़े रहना अच्छा भी नहीं लग रहा था।

यह जताते हुए कि अस्पताल वालों से छुपाकर मैं सिगरेट पीना चाहता हूँ –– मैं खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। बाहर लू चल रही थी। नीचे धरातल पर कुछ लोग आ–जा रहे थे। वे ऊपर से बहुत लाचार और बेचारे लग रहे थे। और मेरे मन से सबके शुभ के लिए सद्भावना की नदियाँ फूट रही थीं...ऐसे में तुम सोचो –– लगता है मनुष्य ने मनुष्य के साथ तो सघन और उदात्त संबंध बना लिए हैं, पर ईश्वर के साथ वह ऐसा नहीं कर पाया है। मनुष्य अपने ईश्वर के दुरूख–सुख में शामिल नहीं हो सकता। ईश्वर से उसका संबंध सिर्फ दाता और पाता का है। वह देता है और मनुष्य पाता है। कितना इकतरफा रिश्ता है यह...और फिर अगर तुम यह भी मान लो कि ईश्वर ही मनुष्य को बनाता है तो ईश्वर की क्षमता पर विश्वास घटने लगता है –– सृष्टि के आदि से वह मनुष्य को बनाता आ रहा है परंतु असंख्य प्राणियों को बनाने के बावजूद वह आज तक एक सहज सम्पूर्ण और मुकम्मिल मनुष्य नहीं बना पाया। कुछ कमी कहीं तो ईश्वर की व्यवस्था में भी है.. हो सकता है उनका आदि –कलाकार कुम्भकार उन्हें मिट्टी सप्लाई करने में कुछ घपला कर रहा हो। ...इस रहस्य का पता कौन लगाएगा? रहस्य ही रहस्य को जन्म देता है। शायद इसीलिए मनुष्य ने ईश्वर को रहस्य ही रहने दिया...जो सत्ता या शक्ति विश्वास के निकष पर खरी न उतरे, उसे रहस्य बना देना ही बेहतर है...और किया भी क्या जा सकता है...।

लू के एक थपेड़े ने मेरा मुँह झुलसा दिया। डॉक्टर अपने चिन्ताग्रस्त शुभचिन्तकों के गुच्छे में खड़े थे –– और सबके चेहरे कुछ ज्यादा सतर्क थे।

–ब्लडप्रेशर गिर रहा है...

आई०सी०यू० में डॉक्टरों और नर्सो की आमदरफ्त से लग रहा था कि कोई कठिन परिस्थिति सामने है। कुछ देर बाद पता चला कि नीडिल कुछ ढीली हो गई थी...उसे ठीक कर दिया गया है और ब्लडप्रेशर ठीक से रिकॉर्ड हो रहा है...सबने राहत की साँस ली। मौत से लड़ना कोई मामूली काम नहीं है। ईश्वर ने तो मौत पैदा की ही है, पर मौत तो मनुष्य भी पैदा करता है। एक तरफ जीवन के लिए लड़ता है ओर दूसरी तरफ मौत भी बांटता है –– यह द्वंद्व ही तो जीवन है.. यह द्वंद्व और द्वैत ही जीवित रहने की शर्त है और अद्वैत या समानता तक पहुँचने का साधन और आदर्श भी। आध्यात्मिक अद्वैत जब भौतिकता की सतह पर आता है और मनुष्य के प्रश्न सुलझाता है तभी तो वह समवेत समानता का दर्शन कहलाता है...

सिगरेट से मुँह कड़वा हो गया था। लू वैसे ही थपेड़े मार रही थी। सीमेण्ट के पलस्तर का दहकता–चिलचिलाता तालाब सामने फैला था –– कोई एक आदमी जलते नंगे पैरों से उसे पार कर रहा था।

मैंने पलटते हुए लिफ्ट की तरफ देखा। डॉक्टर मेरा आशय समझ गए थे, लेकिन तभी राजनीतिज्ञ–से उनके कोई दोस्त आ गए थे। शुरू की पूछताछ के बाद वे लगभग भाषण–सा देने लगे –– अब तो अग्नि मिसाइल के बाद भारत दुनिया का सबसे शक्तिशाली तीसरा देश हो गया है और आने वाले दस वर्षो में हमें अब कोई शक्ति महाशक्ति बनने से नहीं रोक सकती। इंग्लैंड और फ्राँस की पूरी जनसंख्या से ज्यादा बड़ा है आज भारत का मध्यवर्ग... अपनी संपन्ता में...भारतीय मध्यवर्ग जैसी शक्ति और संपन्नता उन देशों के मध्यवर्ग के पास भी नहीं है...।

तभी एक चिन्ताग्रस्त नर्स तेजी से गुजर गई और सन्नाटा छा गया। चिन्ता के भारी क्षण जब कुछ हल्के हुए तो मैंने फिर लिफ्ट की तरफ देखा। डॉक्टर साहब समझ गए –– आपको ढाई –तीन घण्टे हो गए...क्या–क्या काम छोड़ के आए होंगे...। और वे लिफ्ट की ओर बढ़े। लिफ्ट आई, पर वह ऊपर जा रही थी। डॉक्टर साहब को मेरी खातिर रूकना न पड़े, इसलिए मैं लिफ्ट में घुस गया।

लिफ्ट आठ पर पहुँची। वहाँ ज्यादा लोग नहीं थे। पर एक स्ट्रेचर था और दो–तीन लोग। स्ट्रेचर भीतर आया उसी के साथ लोग भी। स्ट्रेचर पर चादर में लिपटा बच्चा पड़ा हुआ था। वह बेहोश था। वह आपरेशन के बाद लौट रहा था। उसके गालों और गर्दन के रेशमी रोएँ पसीने से भीगे हुए थे। माथे पर बाल भी पसीने के कारण चिपके हुए थे।

उसका बाप एक हाथ में ग्लूकोज की बोतल पकड़े हुए था... ग्लूकोज की नली की सुई उसकी थकी और दूधभरी बाँह की धमनी में लगी हुई थी...उसका बाप लगातार उसे देख रहा था...वह शायद पसीने से माथे पर चिपके उसके बालों को हटाना चाहता था, इसलिए उसने दूसरा हाथ ऊपंर किया, पर उस हाथ में बच्चे की चप्पलें उसकी उंगलियों में उलझी हुई थीं... वह छोटी–छोटी नीली हवाई चप्पलें....।

मैंने बच्चे को देखा। फिर उसके निरीह बाप को।

मेरे मुँह से अनायास निकल ही गया –– इसका...

"इसकी टाँग काटी गई है।" वार्ड बॉय ने बाप की मुश्किल हल कर दी।

ओह ! कुछ हो गया था ? मैंने जैसे उसके बाप से ही पूछा। वह मुझे देखकर चुप रह गया... उसके ओठ कुछ बुदबुदाकर थम गए... लेकिन वह भी चुप नहीं रह सका। एक पल बाद ही बोला –– जांघ की हड्डी टूट गई थी...।

चोट लगी थी ?

नहीं, सड़क पार कर रहा था...एक गाड़ी ने मार दिया–– वह बोला और मेरी तरफ ऐसे देखा, जैसे टक्कर मारने वाली गाड़ी मेरी ही थी।

फिर वह वीतराग होकर अपने बेटे को देखने लगा।

पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट रुकी। बच्चों का वार्ड इसी मंजिल पर था। लिफ्ट में आने वाले कई लोग थे। वे सब स्ट्रैचर निकाले जाने के इन्तजार में बेसब्री से रुके हुए थे... वार्ड बॉय ने झटका देकर स्ट्रेचर निकाला तो बच्चा बोरे की तरह हिल उठा, अनायास ही मेरे मुंह से निकल गया –– धीरे से...।

ये तो बेहोश है... इसे क्या पता...? स्ट्रेचर को बाहर पुश करते हुए वार्ड बॉय ने कहा।

उस बच्चे का बाप खुले दरवाजे से टकराता हुआ बाहर निकला तो एक नर्स ने उसके हाथ की ग्लूकोज की बोतल पकड़ ली।

लिफ्ट के बाहर पहुँचते ही उसके बाप ने उसकी दोनों नीली हवाई चप्पलें वहीं कोने में फेंक दीं... फिर कुछ सोचकर कि शायद उसका बेटा होश में आते ही चप्पलें माँगेगा, उसने पहले एक चप्पल उठाई... फिर दूसरी भी उठा ली और स्ट्रेचर के पीछे–पीछे वार्ड की तरफ जाने लगा।

मुझे नहीं मालूम कि उसका बेटा जब होश में आएगा तो क्या माँगेगा, चप्पल माँगेगा या चप्पलों को देखकर अपना पैर माँगेगा...।

बेसब्री से इन्तजार करते लोग लिफ्ट में आ गए थे। लिफ्टमैन ने बटन दबाया। दरवाजा बन्द हुआ। और वह लोहे का बन्द कमरा नीचे उतरने लगा।

नीयत में खोट

एक बुढ़िया दूसरे गांव जाने के लिए अपने घर से निकली। उसके पास एक गठरी भी थी । चलते–चलते वह थक गई। थकान की वजह से उसे गठरी का बोझ भारी लगने लगा था। तभी उसने देखा कि पीछे से एक घुड़सवार चला आ रहा है। बुढ़िया ने उसे आवाज दी। घुड़सवार पास आया और बोला, 'क्या बात है अम्मा, मुझे क्यों बुलाया ?' बुढ़िया ने कहा, 'बेटा, मुझे सामने वाले गांव जाना है। बहुत थक गई हूं। गठरी उठाई नहीं जाती। तू भी शायद उधर ही जा रहा है। ये गठरी घोड़े पर रख ले। मुझे चलने में आसानी हो जाएगी।' घुड़सवार ने कहा, 'अम्मा, तू पैदल है। मैं घोड़े पर हूं। गाँव अभी दूर है। पता नहीं तू कब तक वहां पहुंचेगी। मैं तो थोड़ी ही देर में पहुंच जाऊँगा। मुझे तो आगे जाना है। वहां क्या तेरा इंतजार करते थोड़े ही बैठा रहूंगा ?' यह कहकर वह चल पड़ा। कुछ दूर जाने के बाद वह सोचने लगा, 'मैं भी कितना मूर्ख हूं। बुढ़िया ढंग से चल भी नहीं सकती। क्या पता, उसे ठीक से दिखाई भी देता हो या नहीं? वह मुझे गठरी दे रही थी। संभव है, उसमें कीमती सामान हो। मैं उसे लेकर भाग जाता तो कौन पूछता! बेकार ही मैंने उसे मना कर दिया।' गलती सुधारने की गरज से वह फिर बुढ़िया के पास आकर बोला, 'अम्मा लाओ अपनी गठरी। मैं ले चलता हूं। गांव में रूककर तेरी राह देखूंगा।' किंतु बुढ़िया ने कहा, 'ना बेटा, अब तू जा, मुझे गठरी नहीं देनी।' यह सुन घुड़सवार बोला, 'अभी तो तू कह रही था कि ले चल! अब ले चलने को तैयार हुआ तो गठरी दे नहीं रही। यह उल्टी बात तुझे किसने समझाई?' बुढ़िया मुस्कुराकर बोली, 'उसी ने समझाई है जिसने तुझे यह समझाया कि बुढिया की गठरी ले ले। जो तेरे भीतर बैठा है, वही मेरे भीतर भी बैठा है। जब तू लौटकर आया तभी मुझे शक हो गया कि तेरी नीयत में खोट आ गया है।'

साभारः www.ekda.nbt.in

कायान्तरण

जंगल की संसद में भारी दंगल था । मामला ही कुछ ऐसा था। जंगल रक्षक दल के दाँत और पंजे पैने करने वाले पत्थर कम होते–होते गायब हो गए, खाद्य आपूर्ति घटिया और जरूरत से बहुत कम थी, पीने के पानी की ओर किसी का ध्यान न था । ऐसे में जंगल की सुरक्षा का क्या ? विपक्ष पानी पी–पी कर वर्तमान सरकार को कोस रहा था और सरकार इस सब का दोष विपक्ष की पूर्ववर्ती सरकार के मत्थे मढ़ कर प्रसन्न थी ।

"पिछली सरकार का रक्षा बजट भी कितना कम था। आपको रक्षकों के जीवन की चिंता ही कहाँ थी ?" नए रक्षा मंत्री ने कहा।

"तो आपने ही कौन सी भारी रकम दी है!" पलटकर लोमड़ी देवी बोली ।

"आपने छोड़ा ही क्या था..खाली खजाना, दाँत पैने करने के पत्थर तक बेच खाए! अब आप लोग ही बताएँ कि हम रक्षक अपने दाँत कैसे पैने करें?" उत्तर पर और हंगामा हो गया । लगा पक्ष–विपक्ष अब मारा–मारी पर उतरे ।

"आपस में लड़ना बंद कर मेरे सुझाव सुनिए"–भालू दादा बोले," सभा के हर सदस्य के परिवार से एक सदस्य रक्षक दल में शामिल हो और प्रत्येक सदस्य अपने मासिक वेतन से एक दिन का वेतन रक्षा बजट के निमित्त दान करे। आखिर कितनी ही सुविधाएँ तो आपको मुफ्त जैसी ही प्राप्त हैं !''

"क्या बेवकूफी भरी बात है" –विपक्ष से कोई चिल्लाया ।

"हाँ हाँ..ऐसा कैसे हो सकता है" सरकारी आवाज आई.'. हम सरकार चलाएँ या मोर्चे पर लड़ें ? इतना वेतन भी कम पड़ जाता है!'

'आपको अपनी जान बहुत प्यारी है न, इसलिए। सीमा पर रक्षक दल में शामिल होकर देखिए,तो पता चले !! यहाँ बरगद की ठंडी छाँव में बैठकर बहस करना बहुत आसान है'–अध्यक्ष हाथी दादा ने फटकार लगाई ।

''नहीं–नहीं यह बिल्कुल भी संभव नहीं ! और कितना बेहूदा सुझाव है !' पक्ष–विपक्ष की आवाजें गड्मगड्ड हो गईं ।

गिरगिट हैरान थे ।

– डॉ.ज्योत्स्ना शर्मा

laghukatha.com से

इरेडा
IREDA

बैल कहे किसान से

छोटा सा था जब मैंने अपनी मां का दामन छोड़ा था,
जीवन तुझको मान लिया जब तुझसे नाता जोड़ा था ।
राम–लक्ष्मण भाइयों का एक सुंदर सा जोड़ा था,
छोटा सा था जब मैंने अपनी मां का दामन छोड़ा था ।।

जब मैं तेरे घर में आया, धन में धन ही जोड़ा था,
छांव – धूप तेरे साथ रहा, साथ कभी ना छोड़ा था ।
छोटा सा था जब मैंने अपनी मां का दामन छोड़ा था ।।

गलत–सही की पहचान नहीं, पर हां में हां ही जोड़ा था,
भूख लगी जब भी तझको तो खाना मैंने भी छोड़ा था ।
छोटा सा था जब मैंने अपनी मां का दामन छोड़ा था ।

एक–एक कर तेरा बड़ा परिवार हुआ,
मुख से कभी कुछ न बोला, जब–जब मैं बीमार हुआ ।
तेरी खुशी में मैं ही खुश हुआ, ना आँख से आँसू छोड़ा था,
छोटा सा था जब मैंने अपनी मां का दामन छोड़ा था ।।

जीवन भर मेरा मूल धराया, बूढ़ा हुआ तो कर दिया पराया,
क्या यह बलिदान मेरा कुछ थोड़ा था,
छोटा सा था जब मैंने अपनी मां का दामन छोड़ा था ।।

थोड़े दिन के हैं बस प्राण मेरे, जो निकल बस घर में तेरे,
अन्नदाता सुख–दुख के मेहमान मेरे,
न भूलेगा तू कभी मुझे ये विश्वास न दिल ने छोड़ा था ।
छोटा सा था जब मैंने अपनी मां का दामन छोड़ा था ।।

प्रेम सिंह चन्देलिया
भारतीय राज्य फार्म निगम
14–15 फार्म भवन नेहरू प्लेस
नई दिल्ली –110019

अफ़सोस

और शुक्ला जी कल कोई खास खबर ? बड़े बाबू एक दिन की छुट्टी के बाद दफ्तर आये थे।

"नहीं कुछ खास नहीं, हां कल एक पार्टी बहुत ही बढ़िया कलैंडर पूरे स्टाफ में बांट गयी थी। आपका भी आपकी सीट पर रखवा दिया था।"

"पर यहां तो नहीं है बाबू ने सब तरफ देखकर कहा।"

"अरे कल वहीं तो रखवा दिया था। लगता है कोई मार ले गया।"

"यार ये तो बहुत बुरी बात है। तुम लोग बस अपना ही ध्यान रखते हो। दूसरे का कोई खयाल नहीं है।" बड़े बाबू कलैंडर के लिये बेचैन हुये जा रहे थे ।

"अरे बड़े बाबू भूल भी जाइए उसे, कभी काई और दे जायेगा।"

"अरे कैसे भूल जायें शुक्ला जी। दरअसल कोई चीज न मिली हो तो दुख नहीं होता। पर मिलकर खो जाये तो बहुत बेचौनी होती है। अभी तो तुम नहीं बताते तो कोई बात नहीं थी पर अब अच्छा नहीं लग रहा।"

"बड़े बाबू कल आप छुट्टी पर थे, कोई खास काम था क्या ?" शुक्ला जी ने बड़े बाबू का ध्यान हटाने के उद्देश्य से पूछा।

"नहीं कुछ खास नहीं था। दरअसल कल पत्नी का एबार्शन करा दिया।"

"अबार्शन कराते वक्त दुख तो हुआ होगा न। आखिर अपने ही बच्चे की हत्या अपने सामने हो तो कितना खराब लगता होगा।"

"अरे नहीं इसमें दुख की क्या बात है। दरअसल लड़की थी। करा दिया तो जैसे एक बोझ उतर गया। बड़ी राहत महससू कर रहे हैं। अच्छा वो कौन सी पार्टी थी ? पहले उससे मेरा कलैंडर मंगाकर दो, तभी काम शुरू हो पायेगा वरना सारा दिन कलैंडर मंगाकर दो, तभी काम शुरू हो पायेगा वरना सारा दिन कलैंडर का ही अफसोस रहेगा।" इतना कहकर बड़े बाबू अशक्त होकर कुर्सी में ढेर हो गये ।

–उमेश मोहन धवन

साभारः gadyakosh.org

क्या तुमने कभी...

क्या तुमने कभी संगीत को सुना है.... सुर हमेशा सरगम में ही नहीं होते.... पत्थरों, झरनों, चिड़ियों और माँ को पुकारते नन्हों के रुदन में भी होते हैं।

क्या तुमने कभी चांदनी को देखा है .... चमक हमेशा चाँद में ही नहीं होती.... 'उनकी' यादों में, आँखों में और बातों में भी होती है।

क्या तुमने कभी भूख को देखा है... भूख हमेशा गरीब के पेट में ही नहीं होती... अमीरों के दिलो–दिमाग, तन और जेब में भी होती है।

क्या तुमने कभी गरीबी को देखा है... गरीबी हमेशा झोंपड़ी में ही नहीं होती... लोगों के विचार, सोच और दिल में भी होती है।

क्या तुमने कभी जिंदगी को देखा है... जिंदगी हमेशा जीते रहने में ही नहीं होती... हौसले, जज्बे और जिंदगी से जूझती मौत में भी होती है।

– रश्मि

साभारः gadyakosh.org

इरेडा
IREDA

आपसी विश्वास

संत कबीर रोज सत्संग किया करते थे। दूर–दूर से लोग उनकी बात सुनने आते थे। एक दिन सत्संग खत्म होने पर भी एक आदमी बैठा ही रहा। कबीर ने इसका कारण पूछा तो वह बोला मुझे आपसे कुछ पूछना है। मैं गृहस्थ हूं, घर में सभी लोगों से मेरा झगड़ा होता रहता है। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरे यहां गृह क्लेश क्यों होता है और वह कैसे दूर हो सकता है ? कबीर थोड़ी देर चुप रहे, फिर उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, लालटेन जलाकर लाओ। उनकी पत्नी लालटेन जलाकर ले आई। वह आदमी भौचक्का रह गया। सोचने लगा, इतनी दोपहर में कबीर ने लालटेन क्यों मंगाई। थोड़ी देर बाद कबीर बोले कुछ मीठा दे जाना। इस बार उनकी पत्नी मीठे के बजाए नमकीन देकर चली गई। उस आदमी ने सोचा कि यह तो शायद पागलों का घर है। मीठा के बदले नमकीन, दिन में लालटेन। वह बोला, कबीर जी मैं चलता हूँ।

कबीर ने पूछा 'आपको अपनी समस्या का समाधान मिला या अभी कुछ संशय बाकी हैं?' वह व्यक्ति बोला, 'मेरी समझ में कुछ नहीं आया, कबीर ने कहा, जैसे मैंने लालटेन मंगवाई तो मेरी घरवाली कह सकती थी कि तुम क्या सठिया गए हो। इतनी दोपहर में लालटेन की क्या जरूरत। लेकिन नहीं, उसने सोचा कि जरूर किसी काम के लिए मंगवाई होगी। मीठा मंगवाया तो नमकीन देकर चली गई। हो सकता है घर में कोई मीठी वस्तु न हो। यह सोचकर मैं चुप रहा। इसमें तकरार क्या।? आपसी विश्वास बढ़ाने और तकरार में न फंसने से विषय परिस्थिति अपने आप दूर हो गई।' उस आदमी को हैरानी हुई। वह समझ गया कि कबीर ने यह सब उसे बताने के लिए किया था। कबीर ने फिर कहा, "'गृहस्थी में आपसी विश्वास से ही तालमेल बनता है। आदमी में गलती हो तो औरत संभाल ले और औरत से कोई त्रुटि हो जाए तो पति उसे नजरअंदाज कर दे। यही गृहस्थ का मूल मंत्र है।"

परिवार से बड़ा कोई धन नहीं!
पिता से बड़ा कोई सलाहकार नहीं!
माँ की छांव से बड़ी कोई दुनिया नहीं!
भाई से अच्छा कोई भागीदार नहीं!
बहन से बड़ा कोई शुभचिंतक नहीं!
पत्नी से बड़ा कोई दोस्त नहीं!
परिवार के बिना जीवन नहीं!

– आशीष जॉन एक्का
सहा. त. अधिकारी, इरेडा

लिफ्ट

मूसलाधार बारिश में छाते में भीगती हुई लड़की को सड़क पर पैदल चलते हुए देखकर मुझसे रहा नहीं गया। गाड़ी तुरंत उसके आगे रोककर बोला, "अरे! आप तो बुरी तरह से भीग रही हैं आइए मैं छोड़ दूंगा आपको। "लड़की सकपकाकर बोली– "नहीं आप अपना काम कीजिए, मैं चली जाऊंगी।" थोड़ी गाडी बढ़ाने को ही हुआ कि घबराकर बोल उठी– "आज मेरा एग्जाम है जल्दी ही यूनिवर्सिटी पहुंचना है।" मैंने तत्काल दरवाजा खोला तो वह सकपकाकर बैठ गई। और कहने लगी.. "गाड़ी भी गीली हो जाएगी।" "कोई बात नहीं" कहकर मैंने उसे आश्वस्त किया तो कुछ निश्चिंतता के भाव उसके चेहरे पर दिखाई देने लगे।

रास्ते भर उससे समाज की ऊंच–नीच, भ्रष्टाचार, अनैतिकता और कुछ पढ़ाई के विषय के संबंध में बात करते करते मैं जैसे ही विश्वविद्यालय के गेट तक पहुंचा तो बोली, "मुझे आप यहीं उतार दें बस यहीं तक जाना है मुझे। आपका बहुत बहुत धन्यवाद। आज मेरी परीक्षा जरूर अच्छी ही होगी मेरी पूरी तैयारी जो है।" मैं हंसकर बोला "अरे मैडम परीक्षा आपकी ही नहीं मेरी भी थी।" मेरे इतना कहते ही वह जोश से बोली "आपको तो मैंने सौ में से दो सौ नंबर दिए हैं।"

यह कहानी मानवीय मूल्यों का संदेश देती है। आज के युग में किसी से सहायता मांगना और सहायता करना भी चुनौतीपूर्ण है और परीक्षा देने से कम नहीं हैं। स्वयं सहायता मांगने वाले के लिए भी एक चुनौती है कि क्या जिससे आशा लगाए बैठे हैं वह हमारी अपेक्षा के अनुसार होगा या नहीं। दूसरी ओर सहायता करने वाला भी समझ नहीं पाता कि क्या वास्तव में वह याचक की दृष्टि में खरा उतरा या नहीं। ऐसे में स्वयं सहायता के लिए आगे आने वाला मनुष्य स्वयं में कितना ही सरल क्यों न हो लेकिन संदेह के दायरे में घिर जाता है।

मैं हंसते हुए हाथ हिलाकर चल दिया।

– पूनम सुभाष
मुख्य राजभाषा अनुवादक
एचपीसीएल, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर, दिल्ली

खुशवंत सिंह मेरी यादों में....

अपनी बेबाकी और बिंदासपन के लिए मशहूर रहे वकील, लेखक, पत्रकार सरदार खुशवंत सिंह मेरी यादों में अब भी चित्रित हैं। उनके जीवन के अनेक रंगों की छटाएं किसी चलचित्र की तरह मेरे दिल–ओ–दिमाग में चलती–फिरती रहती हैं। मुझे मि. सिंह से मिलने का सौभाग्य तो नहीं मिला पर शायद उनकी बेबाक शैली, निडर अंदाज, अपनी बात रखने का तरीका और हंसी– मजाक के साथ जिंदगी को पूर्णता के साथ जीने की कला मुझे भा गई।

मैंने खुशवंत सिंह को कैसे पढ़ना शुरू किया? इसका एक वाक़्या है – जब मैं अंग्रेजी साहित्य से परास्नातक (Post Graduation) कर रहा था, तो मैंने अपने सिलेबस में Indian Literature के स्थान पर American Literature का चयन कर रखा था। जिस कारण से Indo & Anglian लेखकों के बारे अधिक जानकारी नहीं हो पाती थी। एक दिन की बात है कि अंग्रेजी के मेरे गुरु प्रो. एस.डी. शुक्ला जी ने कहा कि कभी मौका मिले तो Indian Literature में खुशवंत सिंह को भी पढ़ो। तब से पता नहीं क्या हुआ कि मैं खुशवंत सिंह का प्रत्येक 'Piece' पढ़ने को बेचैन हो उठता। खुशवंत सिंह को एक बार पढ़ने के बाद यह सफर अनवरत जारी है।

उनका नियमित कॉलम 'बुरा मानो या भला', 'ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर' 'With Malice Towards one and all' विभिन्न हिंदी–अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपता रहा। उनके प्रशंसक अंग्रेजी से कहीं ज्यादा हिंदी में थे। भाषा की सरहदों को तोड़कर उनका कॉलम नियमित रूप से देश के विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ करता था।

सरदार खुशवंत सिंह की जिंदगी किसी नाटकीय घटना क्रम से कम नहीं है। उनका जन्म 02 फरवरी, 1915 में ग्राम–हडाली, अविभाजित भारत (वर्तमान पाकिस्तान, सरगोधा जिला) में हुआ। उनका असली नाम खुशाल सिंह था। स्कूल में सहपाठी खुशाल कहकर चिढ़ाते थे, तो उन्होंने अपना नाम स्वयं रख लिया और बन गए 'खुशवंत सिंह'। उन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर, सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली से शिक्षा प्राप्त करने के बाद किंग्स कॉलेज ऑफ लंदन से (L.L.B.) कानून की डिग्री ली। उसके बाद लाहौर में वकालत शुरू की। वकालत चली नहीं और दिल्ली आ गए। उस समय उनके पिता सोभा सिंह अपने समय के प्रसिद्ध भवन निर्माता (Builder) थे और अंग्रेजों से ठेके लिया करते थे। सोभा सिंह को उस समय आधी दिल्ली का मालिक कहा जाता था। वकालत के पेशे पर एक बार उन्होंने कहा था, **"I loathed the law. I thought I can't waste my entire life living off other people's quarrels."**

वकालत छोड़ने के बाद वे दिल्ली लौट आए और वर्ष 1948–50 तक भारत सरकार की विदेश सेवा में टोरंटो, कनाडा में मीडिया के इंफॉरमेशन ऑफीसर (Information Officer) और यूनाइटेड किंगडम में हाई कमीशन के लिए प्रेस अटाशे (Press Attache) तथा आयरलैंड के दूतावास (Embassy) में बतौर पब्लिक ऑफीसर (Public Officer) कार्य किया। बाद के दिनों में उन्होंने अपना करियर अनिश्चितता से भरे पत्रकारिता और लेखन जैसे क्षेत्र में शुरू किया।

सामाजिक–आर्थिक मुद्दों पर आधारित नीति आयोग की पत्रिका 'योजना' के संस्थापक संपादक रहे और वर्ष 1957 में पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित किया। आज यह पत्रिका प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू को मिलाकर कुल 13 भाषाओं में प्रकाशित की जा रही है।

सार्वजनिक जीवन में खुशवंत सिंह की छवि ओल्ड डर्टी मैन या वूमनाइजर की बनी। परन्तु बहुत कम लोग ही जानते हैं कि अपनी निजी जिंदगी में मि. सिंह बहुत ही मुश्तैद, वक्त के पाबंद (Punctual) और अनुशासित रहे। वे हमेशा सुबह

4:00 बजे जगे और रात में नियमित रूप से सिंगल माल्ट विह्स्की लेकर सोने चले जाते थे।

मि. सिंह को पढ़ना तो आसान है मगर डाइजेस्ट करना बहुत ही मुश्किल काम है। क्योंकि उनके लेखों या रचनाओं में बेबाकपन और ओपननेस है जिसे बहुत लोग बर्दाश्त नहीं कर पाते। खासतौर पर वे लोग जो ईमानदार होने का नाटक करते हैं और पाखंडी (Hypocrite) हैं । उनके लेख राजनीति, धर्म, सामाजिक–आर्थिक मुद्दों, विदेशी यात्राएं, बेहतरीन साहित्य, उर्दू शायरी, कविताएं और औरतों पर आधारित रहे हैं। मि. सिंह के जीवन के रंगों की विविधता समझने के लिए हमें नैतिक होना पड़ेगा। कान्फेशंस (Confessions) हम तभी कर पाते हैं जब हमारे पास नैतिक बल होता है। महात्मा गांधी ने 'My Experiments with truth'– 'सत्य के मेरे प्रयोग' में सब कुछ लिख दिया जहां कहीं से वे गुजरे।

मि. सिंह ने 80 से अधिक पुस्तकें लिखीं। जिसमें कई बेस्ट सेलर हैं, जिनमें 'हिस्ट्री ऑफ सिख्स', 'ट्रेन टू पाकिस्तान', हिंदी में – 'पाकिस्तान मेल' (1956) में प्रकाशित हुई जो Modern Classic कहलाई। शुरूआत में इसे ग्रोव प्रेस ने 'मनो माजरा' शीर्षक से तथा इंग्लैंड के चैटो एंड विंड्स ने 'ट्रेन टू पाकिस्तान' के नाम से प्रकाशित किया। 'दिल्ली', 'The Company of women', स्कॉच और स्कॉलरशिप', 'Truth, love & a little malice' हिंदी में – 'सच, प्यार और थोड़ी सी शरारत' और 'I shall not hear the Nightingale' हिंदी में– 'बोलेगी न बुलबुल अब दोबारा' इत्यादि। जिंदगी की ढलती शाम में उन्होंने 'Death At My Door Step' लिखा। जिंदगी को हमेशा उन्होंने जिंदाजिली से जिया और मौत की तैयारी के साथ। खुशवंत सिंह जब तक दिल्ली में रहे प्रायः वे निगम बोध श्मशान घाट पर मौत को करीब से देखने जाया करते थे।

सरदार खुशवंत सिंह की चर्चा गांधी परिवार के बगैर मुकम्मल नहीं होती। 'नेशनल हेराल्ड' अंग्रेजी समाचार पत्र और 'इलस्ट्रेटेड वीकली' जैसी पत्रिका का संपादन किया। खुशवंत सिंह जब 'इलस्ट्रेटेड वीकली' में संपादक बने तो इसका सर्कुलेशन महज पैंतीस हजार था। उन्होंने उसे चार लाख दस हजार तक पहुंचा दिया। इन उपलब्धियों के बावजूद भी मि. सिंह को वहां से बेआबरू होकर निकलना पड़ा। कई वर्षों तक 'Hindustan Times' के संपादक रहे। एक बार किसी ने इस समाचार पत्र पर टिप्पणी पूछी तो उन्होंने कहा "यह सबसे घटिया और सबसे ज्यादा बिकने वाला अखबार है।"

अपनी जिंदगी के 99वें वर्ष में मि. सिंह की पुस्तक 'खुशवंतनामा'– द लैसंस ऑफ माई लाइफ' प्रकाशित हुई। इसमें उनके 'Confessions' और बुढ़ापे में मौत का डर और कुछ अच्छे जीवन जीने के सूत्र भी हैं। देश के विभिन्न अखबारों में खुशवंत सिंह का नियमित स्तंभ (Column) प्रकाशित होता था, जिसमें राजनीति, धर्म, सामाजिक मुद्दों, उर्दू शायरी, साहित्य इत्यादि पर लेख होता था और अंत (conclude) किसी उर्दू शेर या जोक से करते थे जो उन्हें किसी पाठक द्वारा कन्ट्रीब्यूट किया जाता था। जीवन को इतनी शिद्दत और गहराई से छूने की कला सिर्फ खुशवंत सिंह में ही थी।

भारत सरकार ने साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें 1974 में पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। परन्तु 3 जून से 8 जून, 1984 में हुए 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' के विरोध में अपना सम्मान वापस लौटा दिया। बाद में उन्हें वर्ष 2007 में पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 1970 से 1986 तक राज्य सभा में मनोनीत सदस्य भी रहे। 2005 में एएफपी के एक साक्षात्कार में उन्होंने 'लेखन' को अपना पैशन बताया उसे "compulsive" कहा। बकौल मि. सिंह, "I don't know what to do with myself if I don't write. I have lost the art of relaxation."

मेरी लेखनी सरदार खुशवंत सिंह के बारे में लिखते हुए पूर्ण न्याय करने में असमर्थ है, क्योंकि मि. सिंह के जीवन के विविध शेड्स यहां पर अनछुए से रह गए। उनके जीवन के अनुभव इतने वाइब्रेंट हैं कि एक 'पीस' में उनको समाहित नहीं किया जा सकता। इसलिए पाठकों से मेरा अनुरोध है कि वो मुझे क्षमा करें। खुशवंत सिंह के जीवन के रंग इतने विविध हैं कि उन्हें दो–चार कागज के टुकडों में मुकम्मल नहीं किया जा सकता। मि. सिंह ने 20 मार्च, 2014 को अपराह्न 12 बजकर, 55 मिनट पर दिल्ली में अपने सुजान सिंह फार्म स्थित घर पर शांतिपूर्वक आखिरी सांस ली और चिर निद्रा में लीन हो गए । 20 मार्च, 2014 को शाम को मैंने अपने 'हॉकर' से दिल्ली से छपने वाले सभी समाचार पत्रों का 21 मार्च का अंक लाने के लिए कहा। सरदार मि. सिंह को पढ़ने का यही मेरा जुनून है।

सरदार खुशवंत सिंह की याद में गालिब का यह शेर और बात खत्म.....

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले।
बहुत निकले मेरे अरमां फिर भी कम निकले।।

– के. सिंह
कनि. हिंदी अनुवादक/जेएचटी
इरेडा, कॉर्पोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

हिन्दी वेबसाइट संसार

विषय	वेबसाइट
भारत देश	: www.bharat.gov.in
	: www.hi.bharatdiscovery.org
	: www.hi.wikipedia.org
राजभाषा हिंदी	: www.rajbhasha.gov.in
	: www.rajbhasha.nic.in
	: www.cstt.nic.in
	: www.hindinideshalaya.nic.in
	: www.chti.rajbhasha.gov.in
	: www.ihatshindi.oneindia.in
	: www.bbchindi.co.uk
	: www.prabhasakshi.com
हिंदी प्रचार–प्रसार से जुड़े संस्थान	: www.hindisansthan.org
	: www.hindivishwa.org
	: www.hindikhoj.com
	: www.publicationdivision.nic.in
हिंदी सॉफ्टवेयर	: www.ildc.in/hindi/hdownloadhindi.html
	: www.cdac.in
हिंदी–अंग्रेजी / अंग्रेजी–हिंदी अनुवाद	: www.translate.google.co.in
हिंदी–अंग्रेजी / अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश	: www.google.com/dictionary
	: www.shabdkosh.com
	: www.hindi-english.org
हिंदी साहित्य	: www.hindi.samay.com
	: www.anubhuti-hindi.org
	: www.abhivyakti-hindi.org
	: www.laghukatha.com
	: www.kavitakosh.org
	: www.gadykosh.org
	: www.hindikunj.com
हिंदी समाचार पत्र	: www.jagran.com
	: www.dainikbhashakar.com
	: www.navbharattimes.indiatimes.com
	: www.livehindustan.com
	: www.webduniya.co.in
	: www.achchhikhabar.com
	: www.amarujala.com
	: hindi.samachar.com
	: www.naidunia.com
अर्थव्यवस्था	: www.hindibusiness-standard.com
पौराणिक ग्रंथ	: www.vedpuran.com
मनोरंजन	: www.hindiliks4u.net
शेरो–शायरी	: www.samaysrijan.com

– के. सिंह

इरेडा
IREDA

मेगावाट से गीगावाट तक

अक्षय ऊर्जा के साथ हरित कल का लक्ष्य

वर्तमान हरित-पावर के प्रोत्साहन से
भारत का कल होगा ऊर्जावान

वर्ष 1987 से अक्षय ऊर्जा को सपोर्ट

वर्ष 2022 तक अक्षय ऊर्जा क्षमता को 175,000 मेगावाट तक 5 गुणा बढ़ाने का भारत सरकार का लक्ष्य

विश्व में चौथी सबसे बड़ी पवन ऊर्जा स्थापना

100 गीगावाट सुनियोजित क्षमता के साथ वर्ष 2022 तक विश्व में सबसे बड़े सौर कार्यक्रमों में से एक

इरेडा द्वारा वित्तपोषित परियोजनाएं 13 मिलियन टन प्रतिवर्ष कार्बन डाई आक्साइड उत्सर्जन को कम करने में मदद कर रही हैं।

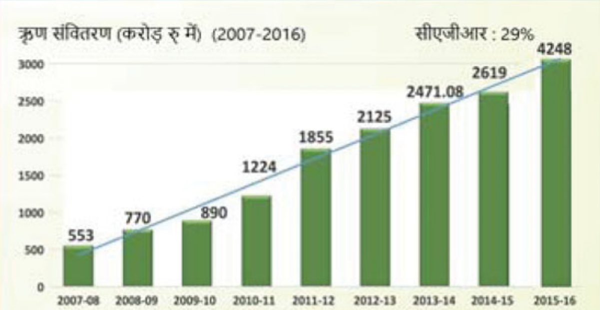

2000 से अधिक अक्षय ऊर्जा परियोजनाएं वित्तपोषित

इरेडा
IREDA
[Mini Ratna Category-I PSU]
IS/ISO 9001 : 2008, 27001 : 2013 Certified

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था सीमित
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)
नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अधीन मिनी रत्न पीएसयू
www.ireda.gov.in